झमेलिया बिआह

झमेलिया बिआह

नाटक

जगदीश प्रसाद मण्डल

-

ISBN : 978-93-80538-45-7

मूल्य : भा. रू. १००/-
पहिल संस्करण : २०१२

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी
मिथिला, बिहार
पिन- ८४७४१०

श्रुतिप्रकाशन
रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at : Ajay Arts, Delhi- ११०००२

Typeset by : Umesh Mandal.

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- ६, Nirmali (Supaul).
मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

JHAMELIYA BIYAH-by Sh. Jagdish Prasad Mandal A Play in Maithili Language.

भूमिका

बीसम सदीक मैथिल मेधा प्रेरणा आ प्रभावक दृष्टिएँ वैविध्यसँ पूर्ण अछि। हरिमोहन बाबूक संगे सुमनजी, किरणजी आ आरसी प्रसाद सिंह पारंपरिक काव्य हेतु आ काव्यप्रयोजनसँ अनुप्राणित छथि ,यद्यपि हिनकर लेखनमे राष्ट्रीयताक कार्यभाग सेहो विलक्षण। यात्रीजी पारंपरिक काव्यप्रयोजनकेँ समाजिक क्रांतिसँ जोड़ैत छथिन आ हरिमोहन झा व्यंग्य विधाकेँ शक्तिशाली औजारक रूपमे प्रयोग करैत छथिन। सदीक उत्तरार्धमे जगदीश प्रसाद मंडलक उदय एकटा महत्वपूर्ण घटना। व्यक्तिगत प्रतिभा आ सामाजिक बोधक जबर्दस्त संतुलन बनबैत जगदीशजी अपन कथा ,कविता ,उपन्यास आ नाटकसँ समानांतर संसारक सृजन करैत छथिन। ई संसार अपन परंपराकेँ जतेक सिनेहसँ देखैत छैक ,बहैत हवा ,बदलैत माटि-पानिक रंगकेँ सेहो अत्यंत हार्दिकतासँ स्वागत करैत छैक। स्वातंत्र्योत्तर भारतक बदलैत सामाजिक ,बौद्धिक परिवर्तनकेँ समेटलाक बादो ई विभिन्न प्रकारक फार्मूलेबाजीकेँ विनम्रतापूर्वक अस्वीकार करैत अछि। संचार-परिवहनक बदलैत उपकरण आ मैथिली समाजक नवोदित बौद्धिक वर्गक अपेक्षाकृत उदारवादी रूखसँ जगदीश प्रसाद मण्डलजी मैथिली साहित्यक अनिवार्य तत्वक रूपमे स्थापित होइत छथि। उत्तर आधुनिक परिवर्तन बौद्धिकताक अंतरालकेँ नीक जकाँ भरैत छैक आ दूरसंचार क्रांतिक हिसाबे जहिना महकौआ केश आ पेरिस तहिना भदेस बेरमा गाम। जगदीशजी ऐ हिसाबे एकटा एहन मानक बनबैत छथिन जे असंभवे जकाँ अछि। ओ केंद्रीयताक विरोध दरभंगा ,पटना वा दिल्लीसँ नै अपन गाममे रहि कऽ करैत छथिन।

बीसम सदीक उत्तरार्धसँ अखन धरि बौद्धिकता आ प्रखरताक दृष्टिऍं विश्व साहित्य उत्तर-आधुनिकतामे डूमल अछि। उत्तर-आधुनिकताक कोनो सर्वमान्य परिभाषा उपलब्ध नै अछि आ विद्वान प्रत्येक नव-प्रवृत्तिकेँ उत्तर-आधुनिक कहि संतुष्ट भऽ जाइत छथिन। ओना ई आंदोलन साहित्य आ सौंदर्यक कोनो सर्वमान्य आ केंद्रीय मानदंडक विरोध करैत अछि आ वर्ग ,क्षेत्र ,देश आ रूचिक हिसाबे रचनाक लोकतांत्रिकताकेँ समर्थन करैत अछि। दलित प्रश्न ,अश्वेत प्रश्न ,नारीक प्रश्न आ गामक प्रश्नक विभिन्न रूप उत्तर-आधुनिक आंदोलनकेँ नव स्वरूप दैत छैक।

मैथिली साहित्य मे ऐ लोकतांत्रिकताक खास रूप जगदीश प्रसाद मंडल जीमे भेटत। ओना ओ प्रवृत्तिक हिसाबे आधुनिक छथि ,पिछड़ल गाम आ पिछड़ल

लोकक प्रति अद्भुत आकर्षणक संग। मुदा मिथिलाक एकटा साधनविहीन गाममे रहि कऽ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धि जइ समर्पणसँ ओ कऽ रहल छथि ,ई साबित कऽ रहल अछि कि मैथिली साहित्य सेहो केंद्रीयक स्थानपर क्षेत्रीय भऽ रहल अछि। आ ई केंद्रीय बनाम क्षेत्रीय उत्तर-आधुनिकतावादक प्रमुख अभिलक्षण अछि। तँए जगदीश प्रसाद मंडलजीकेँ साहित्यमे परिधिपर स्थित गाम ,लोक , जाति ,नारी वर्ग आ आनो आन ओइ वर्ग सभक चित्रण अछि जे अपन आवाज उठाबैमे अक्षम अछि।

उत्तर आधुनिकतावादकेँ दिस कोनो सायास दृष्टि नै हेबाक बाबजूद उत्तरआधुनिक दृष्टिसँ ओ श्रेष्ठ लेखक छथि। एहन लेखक जे कोनो एकल आ एकीकृत संरचनाक स्थानपर विविधता आ बहुलवादक समर्थन करैत हो। सौंदर्य आ मानकक आतंककेँ अस्वीकार करैत जे परंपरागत रूचिमे जनतांत्रिक हस्तक्षेप करैत हो। उत्तर आधुनिकतावाद मानैत छैक कि कोनो मानदंड सर्वमान्य नै। सर्वव्यापी आ शाश्वत मूल्यांकन पद्धतिक विरोधमे उत्तरआधुनिकता विशेष सक्रिय छैक। आ उत्तरआधुनिकताक ऐ प्रवृत्तिपर बल जगदीशजीक संदर्भमे ऐ दुआरे कि हरेक नव संरचना मूल्यांकनक नव कसौटीक मांग करैत छैक।

‘‘झमेलिया बिआह’’ जगदीश प्रसाद मण्डल जीक तेसर नाटक थिक। ऐसँ पहिले ‘मिथिलाक बेटी) -२००९ (आ ‘कम्प्रोमाइज) -२०१० (संग-संग कल्याणी ,बिरांगना ,सतमाए आ समझौता ऐ पाँचो एकांकीक संग्रह पंचवटी नामसँ)२०११ ,(सेहो छन्हि।

झमेलिया बिआह ,मिथिलाक बेटी आ कम्प्रोमाइज ई तीनू नाटक अपन औपन्यासिक विस्तार आ काव्यात्मक दृष्टिसँ परिपूर्ण। लेखक समकालीन विश्व आ गद्यक पारस्परिकतासँ नीक जकाँ परिचित छथि ,तँए हिनकर संपूर्ण रचना-संसारमे समकालीनताक वैभव पसरल अछि ,जत्ते वैचारिक ,ओतबे रूपगत। समकालीनताक प्रति हिनकर झुकाव ‘‘झमेलिया बिआह’’क एकटा विशेष स्वरूप दैत छैक। बारह सालक नेनाक बिआहक ओरियाओन करैत माए-बापक चित्र जत्ते हँसबै छैक ,माएक बेमारी ओतबे सुन्न। लेखकक रचना संसारमे काल-देवताक लेल विशेष जगह ,तँए ई नाटक प्रहसनक प्रारंभिक रूपगुण देखाबितो किछु आर अछि। पहिले दृश्यमे सुशीला कहैत छथिन ‘‘राजा दैवक कोन ठेकान...’’ ,‘‘अगर दुरभाखा पड़तै तँ सुभाखा किअए ने पड़ै छै...।’’ आ राजा ,दैवक कर्तव्यक प्रति ई उदासीनताक अनुभव समस्त आस्तिकता आ भाग्यवादिताकेँ खंडित करैत अछि।

सभ नाटकमे भरत मुनिकेँ खोजनाइ जरूरी नै ,ओना उत्साही विवेचक अर्थ-प्रकृति ,कार्यावस्था आ संधिक खोज करबे करता ,आ कोनो तत्व नै मिलतनितँ चिकड़ि उठता। यद्यपि लेखकक उद्देश्य स्पष्ट अछि। शास्त्रीय रूढ़िजेना नान्दीपाठ ,मंगलाचरण ,प्रस्तावना ,भरतवाक्यक प्रति लेखक कोनो आकर्षण नै देखबैत छथिन। एतबे नै पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतकेँ हूबहू- देकसी -खोजएबलाकेँ आलस सेहो लागतनि। तँए 'झमेलिया बिआह' नाटकमे स्टीरियोटाईप संघर्ष देखबाक ईच्छुक भाय लोकनि कनेक बचि बचा के चलब। विसंगति आ समस्या नाटकक फार्मूलाकेँ नाटकमे खोजएबलाकेँ सेहो झमेला बुझा सकैत छन्हि ,किएक तँ लेखक कोनो फार्मूलाकेँ स्वीकारि कऽ नै लिखैत छथिन।

सीधा-सीधी अंक-बिहिन ''झमेलिया बिआह'' नओ गोट दृश्यमे बँटल अछि :अनेक दृश्यक एकांकी। ने बहुत छोट आ ने नमहर। तीन चारि घंटाक बिना झमेलाकेँ 'झमेलिया बिआह'। एकेटा परदा या बॉक्स सेटपर मंचित होमए योग्य। मात्र घर वा दरबज्जाक साज-सज्जा। तेरहटा पुरुष आ चारिटा स्त्री पात्रक नाटक। छोट-छोट रसगर संवाद ,संघर्ष आ उतार-चढ़ावक संभावनासँ युक्त। ने केतौ नमहर स्वागत ने नमहर संवाद। असंभव दृश्य ,बाढि , हाथी-घोड़ा ,कार जीपक कोनो योजना नै। संवादक द्वारा विभिन्न बरियाती या यात्राक कथासँ जिज्ञासा आ आद्यांत आकर्षण। कथामे चैता केर रमणीयता आ मर्यादा ,तँए जोगीराक दिशाहीनता आ उद्दाम वेग नै भेटत। गंभीर साहित्य सर्वदा अपन समैक अन्न ,खून पसेनाक गंधसँ युक्त होइत अछि। आ ''झमेलिया बिआह'' सेहो पावनि-तिहार ,भनसा घरक फोड़न-छौंक ,सोयरी ,श्मशान आ पकमानक बहुवर्णी गंधसँ युक्त अछि ,एकदम ओहिना जेना पाब्लो नेरूदा विभिन्न कोटिक गंधकेँ कवितामे खोजैत छथिन।

'झमेलिया बिआह'क सामाजिक आ सांस्कृतिक आधारपर कनेक विचार करू। ई ओइठामक नाटक अछि ,जतए कर्मपर जन्म ,संयोग आ कालदेवताकेँ अंकुश छैक ,जइठामक लोक मानैत छथिन जे कखनो मुँहसँ अवाच कथा नै निकाली। दुरभक्खो विषाइ छै। सामाजिक रूपेँ ओ वर्ग जेकर हँसी-खुशी माटिक तरमे तोपा गेल अछि। लैंगिक विचार हुनकर ई जे पुरुख आ स्त्रीगणक काज फुट-फुट अछि। आ विकासक उदाहरण ई कि जइठीन मथ-टनकीक एकटा गोटी नै भेटै छै तइठीन साल भरि पथ-पानिक संग दवाइ खाएब पार लागत?

मुदा जगदीशजी केवल सातत्य आ निरंतरताक लेखक नै छथिन , परिवर्तनक छोट-छोट यतिपर अपन कैमरासँ फ्लैश दैत रहैत छथिन। तँए यथास्थितिवादक लेल अभिशप्त होइतो यशोधर बुझैत छथिन जे मनुक्खक मनुखता गुणमे छिपल छै नै कि रंगमे। आ सुशीला सामाजिक स्थितिपर बिगड़ैत छथिन कि विधाताकेँ चूक भेलनि जे मनुक्खोकेँ सींघ नांगरि किअए ने देलखिन। आ ई नाटक कालदेवताक ओइ खंडसँ जुड़ैत अछि जतए पोता श्याम तेरह के थर्टिन आ तीन के थ्री कहैत छथिन। ऐठाम अखबार आबैत छैक आ राजदेव देशभक्तिक परिभाषाकेँ विस्तृत बनेबाक लेल कटिबद्ध छथिन। खेतमे पसीना चुबबैत खेतिहर ,सड़कपर पत्थर फोड़ैत बोनिहार ,धारमे नाव खेबैतखेबनिहार सभ देश सेवा करैत अछि ,आ राजदेव सभकेँ देशभक्त मानैत छथिन।

'झमेलिया बिआह'क झमेला जिनगीक स्वाभाविक रंग परिवर्तनसँ उद्भूत अछि ,तँए जीवनक सामान्य गतिविधिक चित्रण चलि रहल अछि कथाकेँ बिना नीरस बनेने। नाटकक कथा विकास बिना कोनो बिहाड़िक आगू बढ़ैत अछि ,मुदा लेखकीय कौशल सामान्य कथोपकथनकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। पहिल दृश्यमे पति-पत्नीक बातचितमे हास्यक संग समए देवताक क्रूरता सानल बुझाइत अछि। दोसर दृश्यमे झमेलिया अपन स्वाभाविक कैशोर्यसँ समैक द्वारा तोपल खुशीकेँ खुनबाक प्रयास करैत अछि। पहिल दृश्यमे व्यक्ति परिस्थितिकेँ समक्ष मूक बनल अछि ,आ दोसर दृश्यमे व्यक्तित्व आ समैक संघर्ष कथाकेँ आगू बढ़बैतकथा आ जिनगीकेँ दिशा निर्धारित करैत अछि। तेसर दृश्य देशभक्ति आ विधवा विवाहक प्रश्नकेँ अर्थ विस्तार दैत अछि ,आ ई नाटकक गतिसँ बेशी जिनगीकेँ गतिशील करबाक लेल अनुप्राणित अछि ।

चारिम दृश्यमे राधेश्याम कहैत छथिन जे कमसँ कम तीनक मिलानी अबस हेबाक चाही। आ ,लेखक अत्यंत चुंबकीयतासँ नाटकीय कथामे ओइ जिज्ञासाकेँ समाविष्ट कऽ दैत छथिन कि पता नै मिलान भऽ पेतै आ किनै। ई जिज्ञासा बरियाती-सरियातीक मारिपीट आ समाजक कुकुड़ चालिसँ निरंतर बनल रहैत छैक। आ पांचम दृश्यमे मिथिलाक ओ सनातन 'खोटिकरमा' पुराण। दहेज ,बेटी ,बिआह आ घटकक चक्रव्यूह! आ लेखकक कटुक्ति जे ने केवल मैथिल समाज बल्कि समकालीन बुद्धिजीवी आ आलोचनाक लेल सेहो अकाट्य अछि : कतए नै दलाली अछि। एक्के शब्दकेँ जगह-जगह बदलि-बदलि सभ अपन-अपन हाथ सुतारैए। आ घटकभायकेँ देखिअनु। समैकेँ भागबा आ समैमे आगि लगबाक स्पष्ट दृश्य हुनके देखाइ छन्हि। अपन नीच चेष्टाकेँ छुपबैत

बालगोविन्दकँ एक छिट्टा आर्शीवाद दैत छथिन। बालगोविन्दकँ जाइते हुनकर आस्तिकताक रूपांतरण ऐ बिन्दुपर होइत अछि -"भगवान बड़ीटा छथिन। जँ से नै रहितथि तँ पहाड़क खोहमे रहैबला केना जीबैए। अजगरकँ अहार कतए सँ अबै छै। घास-पातमे फूल-फड़ केना लगै छै.......।"

बातचितक क्रममे ओ बेर-बेर बुझबैक आ फरिछाबैक काज करैत छथि। मैथिल समाजक अगिलगओना। महत्व देबै तँ काजो कऽ देत नै तँ आगि लगा कऽ छोड़त !!!!!

छठम दृश्यमे बाबा आ पोतीक बातचित आ बरियाती जएबा आ नै जएबाक औचित्यपर मंथन। बाबा राजदेव निर्णय नै लऽ पाबै छथिन। बरियाती जएबाक अनिवार्यतापर ओ बिच-बिचहामे छथिन 'छइहो आ नहियो छै। समाजमे दुनू चलै छै। हमरे बिआहमे मामेटा बरियाती गेल रहथि। 'मुदा खाए ,पचबै आ दुइर होइक कोनो समुचित निदान नै भेटैत छैक। बरियाती-सरियातीक व्यवहार शास्त्र बनबैत राजदेव आ कृष्णानंद कथे-बिहनिमे ओझरा कऽ रहि जाइत छथि। दस बरिखक बच्चाकँ श्राद्धमे रसगुल्ला मांगि-मांगि कऽ खाइबला हमर समाज बिआहमे किएक ने खाएत? तँए कामेसर भाय निशाँमे अढ़ाय-तीन सए रसगुल्ला आ किलो चारिएक माछ पचा गेलखिन आ रसगुल्लो सरबा एतए ओतए नै ऑतेमे जा नुका रहल !!!

सातम दृश्य सभसँ नमहर अछि ,मुदा बिआह पूर्व वर आ कन्यागतक झीका-तीरी आ घटकभाय द्वारा बरियाती गमनक विभिन्न रसगर प्रसंगसँ नाटक बोझिल नै होइत छैक। आ घटक भायपर धियान देबै ,पूरा नाटकमे सभसँ बेशी मुहावरा ,लोकोक्ति ,कहबैकाक प्रयोग वएह करैत छथिन। मात्र सातमे दृश्यकँ देखल जाए -

"खरमास) बैसाख जेठ (मे आगि-छाइक डर रहै छै।") अनुभव के बहाने बात मनेनइ.....(।"

"पुरुष नारीक संयोगसँ सृष्टिक निर्माण होइए।") सिद्धांतक तरे धियान मूलबिंदुसँ हटेनइ......(।

"आगूक विचार बढ़बैसँ पहिने एक बेर चाह-पान भऽ जाए।") भोगी आ लालुप समाजक प्रतिनिधि......(।

"जइ काजमे हाथ दइ छी ओइ काजकँ कइये कऽ छोड़ै छी।")गर्वोक्ति ....(

"जिनगीमे पहिल बेर एहेन फेरा लागल।") कथा कहबासँ पहिले धियान आकर्षित करबाक सफल प्रयास....(।

“खाइ पीबैक बेरो भऽ गेल आ देहो हाथ अकड़िगेल......”

“कुटुम नारायण तँ ठरलो खा कऽ पेट भरि लेताह मुदा हमरा तँ कोनो गंजन गृहणी नहिये रखतीह।”) प्रकारांतरसँ अपन महत्व आ योगदान जनबैत ई ध्वनि जे हमरो कहू खाए लेल (आठमो दृश्यमे बालगोविन्द ,यशोधर ,भागेसर , घटकभाय बिआह आ बरियातीकेँ बुझौएल के निदान करबा हेतु प्रयासरत् छथि , आ लेखक घटकभायकेँ पूर्ण नांगट नै बनबैत छथिन ,मुदा ओकर मीठ-मीठ शब्दक निहितार्थकेँ नीक जकाँ खोलि दैत छथिन। ऐ दृश्यमे बाजल बात , मुहावरा ,लोकोक्ति आ प्रसंग ,उदाहरणक बले ओ अपन बात मनबाबए लेल कटिबद्ध छथिन। हुनकर कहबैकापर धियान दिओ -“जमात करए करामात...” , “जाबत बरतन ताबत बरतन...” ,“नै पान तँ पानक डंटियेसँ...” ,“सतरह घाटक सुआद...” ,“अनजान सुनजान महाकल्याण।”

मुदा घटकभायकेँ ऐ सुभाषितानिक की निहितार्थ? ई अर्थ पढ़बाक लेल कोनो मेहनतिकरबाक जरूरी नै। ओ राधेश्यामकेँ कहै छथिन ‘जखन बरियाती पहुंचैए तखन शर्बत ठंडा गरम ,चाह-पान ,सिगरेट-गुटका चलैए। तइपर सँ पतोरा बान्हल जलपान ,तइपर सँ पलाउओ आ भातो ,पूड़िओ आ कचौड़ियो , तइपर सँ रंग-बिरंगक तरकारियो आ अचारो ,तइपर सँ मिठाइयो आ माछो-मासु , तइपर दहियो ,सकड़ौड़िओ आ पनीरो चलैए।

नाटकक नओम आ अंतिम दृश्य। बाबा राजदेव आ पोती सुनीताक वार्तालाप ,आखिर ऐ वार्तालापक की औचित्य? जगदीशजी सन सिद्धहस्त लेखक जानै छथिन जे बीसम आ एकैसम सदीक मिथिला पुरुषहीन भऽ चुकल छैक। यात्री जीक कवितापर विचार करैत कवयित्री अनामिका कहैत छथिन ‘बिहारक बेशी कनियाँ विस्थापित पतिगणक कनियाँ छथि। ‘सिंदूर तिलकित भाल’ ओइ ठाम सर्वदा चिंताक गहींर रेखाक पुंज रहल छैक।

....भूमंडलीकरणक बादो ई स्थिति अछि जे मिथिला ,तिरहुत ,वैशाली , सारण आ चंपारण यानी गंगा पारक बिहारी गाम सभ तरहेँ पुरुषविहीन भऽ गेल छैक।.... सभ पिया परदेशी पिया छथि ओइठाम। गाममे बचल छथि वृद्धा , परित्यक्ता आ किशोरी सभ। एहन किशोरी ,जेकर तुरत्ते-तुरत बिआह भेलै या फेर नै भेल होए ,भेलै ऐ दुआरे नै जे दहेजक लेल पैसा नै जुटल हेतैक।‘बिआह आ दहेजक ऐ समस्याक बीच सुनीताकेँ देखल जाए। एक तरहेँ ओ लेखकक पूर्ण वैचारिक प्रतिनिधि अछि। यद्यपि कखनो-कखनो राजदेव ,कृष्णानंद आ यशोधर सेहो लेखकक विचार व्यक्त करैत छथिन। सुनीता ,सुशीला आ राजदेव मिथिलाक स्थायी आबादी ,आ घटकभाइक बीच रहबाक लेल अभिशप्त

पीढ़ी। कृष्णानंद सन पढ़ल-लिखल युवकक स्थान मिथिलाक गाममे कोनो खास नै। आ लेखक बिना कोनो हो-हल्ला केने नाटकमे ऐ दुष्प्रवृत्तिकेँ राखि देने छथि। जीवन आ नाटकक समांतरता ऐठाम समाप्त भऽ जाइत छैक आ दूटा अर्द्धवृत्त अपन चालि स्वभावकें गमैत जुड़ि पूर्णवृत्त भऽ जाइत अछि।

रवि भूषण पाठक

पात्र परिचय

पुरुष पात्र

भागेसर-	४५ बर्ख
झमेलिया-	१२ बर्ख
यशोधर-	४८ बर्ख
राजदेव-	५५ बर्ख
श्याम, (राजदेवक पोता)-	८ बर्ख,
कृष्णानन्द, (बी.ए. पास)-	२५ बर्ख
बालगोविन्द, (लड़कीक पिता)-	५५ बर्ख
राधेश्याम, (लड़कीक भाय)-	३५ बर्ख
घटक भाय-	६० बर्ख
रूपलाल, (समाज)-	४० बर्ख
गरीबलाल, (समाज)-	४५ बर्ख
धीरजलाल, (समाज)-	४५ बर्ख
पान-सात बच्चा-	७-१५ बर्ख

स्त्री पात्र

सुशीला, (भागेसरक पत्नी)-	४० बर्ख
दायरानी, (बालगोविन्दक पत्नी)-	५२ बर्ख
घटक भाइक पत्नी-	५५ बर्ख
सुनीता, (कॉलेजमे पढ़ैत)-	२० बर्ख

पहिल दृश्य

(भागेसर, सुशीला)

(रोग सज्जापर सुशीला। दबाइ आ पानिनेने भागेसरक प्रवेश।)

भागेसर- केहेन मन लगैए?

सुशीला- की कहब। जखन ओछाइनेपर पड़ल छी, तखन भगवानेक हाथ छन्हि। राजा-दैवक कोन ठेकान?

भागेसर- से की?

सुशीला- उठिकऽ ठाढ़ो भऽ सकै छी, सुतलो रहिसकै छी।

भागेसर- एना किअए बजै छी। कखनो मुँहसँ आवाच् कथा नै निकाली। दुरभखो बिषाइ छै।

सुशीला- (ठहाका दऽ) बताह छी, अगर दुरभाखा पड़तै तँ सुभाखा किअए ने पड़ै छै? सभ मन पतिअबैक छी।

भागेसर- अच्छा पहिने गोटी खा लिअ।

सुशीला- एते दिनसँ दबाइ करै छी कहाँ एकोरत्ती मन नीक होइए?

भागेसर- बदलिकऽ डॉक्टर सहाएब गोटी देलनि। हुनका बुझबेमे फेर भऽ गेल छलनि। सभ बात बुझा कऽ कहलनि।

(गोटी खा पानिपीब पुन: सिरहौनीपर माथ रखि।)

सुशीला- की सभ बुझा कऽ कहलनि?

भागेसर- कहलनिजे एक्के लक्षण-कर्मक कते रंगक बेमारी होइए। बुझैमे दुबिधा भऽ गेल। तँए आइसँ दोसर बेमारीक दबाइ दइ छी।

सुशीला- (दर्दक आगमन होइत पँजरा पकड़ि।) ओह, नै बाँचब। पेट बड़ दुखाइए।

भागेसर- हाथ घुसकाउ ससारिदइ छी।

(सुशीला हाथ घुसकबैत। भागेसर पेट ससारए लगैत कनी कालक पछाति।)

सुशीला- हँ, हँ। कनी कऽ दर्द असान भेल। मन हल्लुक लगैए।

भागेसर- मनसँ सोग-पीड़ा हटाउ। रोगकेँ दबाइ छोड़ाओत। भरिसक दबाइ आ रोगक भीड़ानी भेलै तँए दर्द उपकल।

सुशीला- भऽ सकैए। किअए तँ देखै छिऐ जे भुखल पेटमे छुच्छे पानिपीलासँ पेट ढकर-ढकर करए लगैए। भरिसक सएह होइए।

भागेसर- भगवानक दया हेतनितँ सभ ठीक भऽ जाएत।

सुशीला- किअए भगवानो लोके जकाँ विचारिकऽ काज करै छथिन।

भागेसर- अखैन तक एतबो नै बुझै छिऐ।

सुशीला- हमरा मनमे सदिखन चिन्ते किअए बैसल रहैए। खुशीकेँ कतए नुका कऽ रखिदेने छथि। आ कि.....?

भागेसर- कि, आ की?

सुशीला- नै सएह कहलौं। कियो ठहाका मारिहँसैए आ हमरा सबहक हँसिये हराएल अछि।

भागेसर- हराएल केकरो ने अछि। माटिक तरमे तोपा गेल अछि।

सुशीला- ओ निकलत केना?

भागेसर- खुनिकऽ।

सुशीला- कथीसँ खुनबै?

भागेसर- से जे बुझितौं तँ एहिना थाल-पानिमे जिनगी बीतैत।

सुशीला- जखन अहाँ एतबो नै बुझै छिऐ तँ पुरुख कोन सपेतक भेलौं। अच्छा ऐले मनमे दुख नै करू। नीक-अधलाक बात-विचार दुनू परानी नै करब तँ आनक आशासँ काज चलत।

भागेसर- (मुड़ी डोलबैत जना महसूस करैत, मुँह चिकुरिअबैत।) कहलौं तँ ओहन बात जे आइ धरिहराएल छलै मुदा ई बुझब केना?

(भागेसरक मुँहसँ अगिला दाँत सोझ आएल, जइसँ पत्नी हँसी बूझि।)

सुशीला- अहाँक खुशी देखिअपनो मन खुशिया गेल।

भागेसर- मन कहाँ खुशिआएल अछि।

सुशीला- तखन?

भागेसर- बतीसयासँ सठिया गेल अछि। वएह कलपिकलपि, कुहरिकुहरिकुकुआ रहल अछि।

सुशीला- छोड़ू ऐ लट्टम-पट्टाकेँ। जेकरा पलखैत छै ओ करैत रहह। अपन दुख-सुखक गप करू।

भागेसर- केना दुख-सुखक गप अखैन करब। मन पीड़ाएल अछिहो-ने-हो.......?

सुशीला- की?

भागेसर- पीड़ाएले मन ताउसँ बौराइ छै। पहिने देहक रोग भगाउ तखैन निचेनसँ विचार करब।

सुशीला- बेस कहलौं। भिनसरेसँ झमेलियाकेँ नै देखलिऐ हेन?

भागेसर- बाल-बोध छै कतौ खेलाइत हेतै। भुख लगतै अपने ने दौगल आओत।

सुशीला- ऐ देहक कोनो ठेकान नै अछि। तहूमे बेमारी ओछाइन धरौने अछि। जीता जिनगी पुतोहु देखा दिअए?

भागेसर- मन तँ अपनो तीन सालसँ होइए जे बेटा-बेटी करजासँ उरीन रहब तखन जे मरियो जाएब तँ करजासँ उरीन मनकेँ मुक्तिहएत।

सुशीला- सएह मनमे उपकल जे बेटीक बिआह कइये नेने छी। जँ परानो छुटिजाएत तँ बिनु बरो-बरियातीक लहछु करा अंगबला अंग लगा लेत। मुदा.....?

भागेसर- मुदा की?

सुशीला- यएह जे झमेलियोक बिआह कइये लइतौं।

भागेसर- अखन तँ लगनो-पाती नहिये अछि। समए अबै छै तँ बुझल जेतै।

(झमेलियाक प्रवेश।)

झमेलिया- माए, माए मन नीक भेलौं किने?

सुशीला- बौआ, लाखो रोग मनसँ मेटा जाइए, जखने तोरा देखै छियह। भिनसरेसँ नै देखलिअ कतए गेल छेलहेँ?

झमेलिया- स्कूलक फीलपर एकटा गुनी आएल छलै। बहुत रास किदनिकहाँ सभ झोरामे रखने छलै। डमरूओ बजबै छलै आ गाबिगाबिकहबो करै छलै।

सुशीला- किगबै छलै?

झमेलिया- लाख दुखक एक दबाइ। पाँचे रूपैया दामो छलै।

सुशीला- एकटा किअए नेने एहल?

झमेलिया- हमरा पाइ छलए?

सुशीला- केमहर गेलै?

झमेलिया- मारन बाध दिसक रस्ता पकड़िचलिगेल।

सुशीला- बौआक बिआह कऽ दियौ?

(बिआहक नाओं सुनिझमेलियाक मुँहसँ खुशी निकलैत।)

भागेसर- बिआहैयो जोकर तँ भइये गेल अछि। कहुना-कहुना तँ बारहम बर्ख पार कऽ गेल हएत?

सुशीला- बड़का भुमकमकँ कते दिन भेल हएत। ओही बेर ने जनमल?

भागेसर- सेहो किनीक जकाँ साल जोड़ल अछि। मुदा अपना झमेलियासँ छोट-छोट सभकँ बिआह भेलै तँ झमेलियो भेइये गेल किने?

पटाक्षेप

दोसर दृश्य

(सुरूज डुमैक समए। बाढ़निलऽ झमेलिया आंगन बाहरए लगैत। सुशीला आबिबाढ़निछिनैत।)

सुशीला- जाबे जिबै छी ताबे तोरा केना आंगन-घर बहारए दियौ।

झमेलिया- किअए, केकरो अनकर छिऐ? अपन घर-आंगन बहारब कोनो पाप छी।

सुशीला- धरम आ पाप नै बुझै छी। मुदा एते तँ जरूर बुझै छी जे भगवानेक बाँटल काज छियनिने। पुरुख आ स्त्रीगणक काज फुट-फुट अछि।

झमेलिया- राजा-दैवक काज ऐसँ फुट अछि। सभ दिन कहाँ बहारए अबै छलौं। अखन तू दुखित छैं, जखन नीक भऽ जेमे तखन ने तोहर काज हेतौ।

सुशीला- सएह बुझै छिही, ई नै बुझै छिही जे काजे पुरुख-सत्रीगणक अन्तर कऽ ठाढ़ रखने अछि। भलहिं बेटा छिऐ एहेन-एहेन बेरमे तू नै देखमे तँ दोसर केकर आशा। मुदा.......?

झमेलिया- मुदा की?

सुशीला- यएह जे माए-बाप बेटा-बेटीक पहिल गुरू होइ छै। हिनके सिखैलासँ बेटा-बेटी अपन जिनगीक रास्ता धड़ैए।

(माइयक मुँह झमेलिया ओहिना देखैत अछिजहिना रोगसँ ग्रसित गाए अपन दूधमुँह बच्चा देखिहुकड़ैत अछि। तहिना हाथक बाढ़निनिच्चाँ मुँहे केने सुशीला आँखिझमेलियाक चेहरापर रखिजना पढ़िरहल हुअए जेऐ कुल-खनदान आ परिवारक संग माइयो बापक तँ यएह माटिक काँच दिआरी छी जे अबैत दोसर दिआरीकेँ लेसिटिमटिमाइत रहत। तइकाल भागेसर आ यशोधरक प्रवेश।)

भागेसर- (झमेलियासँ) बौआ साँझ पड़ल जाइ छै, दुआर-दरवज्जाक काज देखहक।

झमेलिया- दरबज्जा बहारिआंगन बहारए एलौं किमाए बाढ़निछीन लेलक।

(बिना किछु बजनहिभागेसर नीक-अधलाक विचार करए लगल।)

(कनीकाल बाद।)

भागेसर- (पत्नीसँ) मन केहेन अछि?

सुशीला- अहूँ बुझिते छी आ अपनो बुझिते छी जे साल भरिदबाइ खाइले डॉक्टर सहाएब कहलनिसे निमहत। जइठीन मथ-टनकीक एकटा गोटी नै भेटै छै तइठीन साल भरिपथ-पानिक संग दबाइ खाएब पार लागत?

(बहिनक बात सुनियशोधरकेँ देह पसीज गेल। चाइनिक पसीना पोछैत।)

यशोधर- बहिन, भगवानो आ कानूनो ऐ परिवारक जबाबदेह बनौने छथि। जाबे जिबै छी ताबे एहेन बात किअए बजै छह?

सुशीला- भैया, अहाँ किअए.....? खाइर छोड़ू काजक की भेल?

यशोधर- बहिन, मने-मन हँसियो लगैए आ मनो कचोटैए। मुदा.......?

सुशीला- मुदा की?

यशोधर- (मुस्की दैत) पनरह दिनमे पएरक तरबा खिआ गेल मुदा काजक गोरा नै बैसल। एकटा लड़कीक भाँज नवानीमे लागल। गेलौं। दरबज्जापर पहुँचिघरवारीकेँ अवाज दैते आंगनसँ निकललाह।

(बिच्चेमे भागेसर मुस्की देलनि।)

सुशीला- कथो-कुटुमैतीकेँ हँसियेमे उड़ा दइ छऐ?

यशोधर- हँसीबला काजे भेल। तँए हँसी लगलनि।

सुशीला- की हँसीबला काज भेल?

यशोधर- दरबज्जापर बैस गप चलेलौं किजहिना हवाक सिहकीमे पाकल आम भड़भड़ा जाइत तहिना स्त्रीगण सभ आबए लगलीह।

सुशीला- स्त्रीगणे अबए लगली आ पुरुख नै?

यशोधर- स्त्रीगण बेसी पुरुख कम। एकटा स्त्रीगण बिच्चेमे टभकिगेलीह।

सुशीला- की टपकली?

यशोधर- (मुस्की दैत) हँसियो लगैए आ छगुन्तो लगैए। बजली जे बर

पेदार अछिकिजे आनठाम कन्यागत जाइत छथिआ अहाँ......? सुनिते मनमे नेसिदेलक। उठिकऽ विदा भऽ गेलौं।

सुशीला- स्त्रीगणेक बात सुनिअगुता गेलौं। परिवारमे बेटा-बेटीक बिआह पैघ काज छिऐ पैघ काजक रास्तामे छोट-छोट हुच्ची-फुच्चीपर नजरिनै देबाक चाहिऐ।

यशोधर- एतबे टा नै ने, गामो नीक नै बूझिपड़ल। आमक गाछीसँ बेसी तरबोनी खजुर बोनी। एहेन गामक स्त्रीगण तँ भरिदिन नहाइये आ झुटकेसँ पएरे-मजैमे बीता देत। तखन घर-आश्रमक काज केना हएत। सोझे उठिकऽ रास्ता धेलौं।

सुशीला- आगू कतए गेलौं?

यशोधर- ननौर। गाम तँ नीक बुझाएल। मुदा राजस्थाने जकाँ पानिक दशा। खाइर कोनो किबेटीक बिआह करब। बेटाक करब। बैसिते गप-सप्प चलल। घरवारी कुल-गोत्र पुछलनि। कहलियनि। सोझे सुहरदे मुँहे कहलनि, कुटुमैती नै हएत।

सुशीला- किअए, से नै पुछलियनि?

यशोधर- किपुछितियनि। उठिकऽ विदा भेलौं।

सुशीला- भैया, दिन-दुनियाँ एहने अछि। कते दिन छी आ किनै छी। मन लगले रहिजाएत।

यशोधर- कोनो किबेटीक अकाल पड़िगेल जे भागिनक बिआह नै हएत।

सुशीला- डॉक्टर सहाएब ऐठाम कते गोटे पेटक बच्चा जँचबए आएल रहए।

यशोधर- ओ सभ बिआहक दुआरे खुरछाँही कटैए। मुदा.....?

सुशीला- मुदा की?

यशोधर- माइयो-बापक सराध छोड़िदेत। बिआहसँ किहल्लुक काज सराधक छै।

सुशीला- ठनका ठनकै छै तँ कियो अपना मत्थापर हाथ दइ छै। ई तँ बुझै छी जे, 'गाए मारिकऽ जूत्ता दान' करैए। मुदा बुझनहिकिहएत। आगूओ बढ़लौं?

यशोधर- छोड़िकेना देब। तेसर ठाम गेलौं तँ पुछलनिजे लड़का गोर अछिकिकारी?

सुशीला- किअए एहेन बात पुछलनि?

यशोधर- लोकक माथमे भुस्सा भरिगेल छै। एतबो बुझैले तैयार नै जे मनुक्खक मनुखता गुणमे छिपल छै नै किरंगमे।

सुशीला- (निराश मने) किझमेलिया ओहिना रहिजाएत। सृष्टिठमकिजाएत?

यशोधर- अखन लगन जोर नै केलकै हेन, तँए। जहिया संयोग आबिजेतै तहिया सभ ओहिना मुँह तकैत रहत आ बिआह भऽ जेतै।

सुशीला- भैया, दिन-रातिएहने अछि। कखन छी कखन नै छी।

यशोधर- बहिन, अइले मनमे दुख करैक काज नै । जखन काजमे भीड़ गेलौं तँ कइये कऽ अंत करब। ओना एकटा लगलगाउ बूझिपड़ल।

सुशीला- की लगलगाउ?

यशोधर- ओ कहलनिजे अहूठामक परिवारक काज देखिलियौ आ ओहूठामक देखिकऽ, काज सम्हारिलेब।

भागेसर- ई काज हेबे करत। अपनो ब्रह्म कहैए जे एक रंगाह परिवार (एक बेवसायसँ जुड़ल)मे कुटुमैती भेने परिवारमे हड़हड़-खटखट कम हएत?

सुशीला- (मुड़ी डोलबैत) हँ, से तँ हएत। मुदा विधाताकेँ चूक भेलनिजे मनुक्खोकेँ सींघ-नाङरिकिअए ने देलखिन।

पटाक्षेप

तेसर दृश्य

(राजदेवक घर। पोता श्यामकेँ पढ़बैत।)

राजदेव- बौआ, स्कूलमे कते शिक्षक छथि?

श्याम- थर्टिन गोरे।

राजदेव- ऐ बेर कोनमे जाएब?

श्याम- थ्रीमे।

(हाथमे अखवार नेने कृष्णानन्दक प्रवेश।)

कृष्णानन्द- कक्का, एकटा दुखद समाचार अपनो गामक अछि?

राजदेव- (जिज्ञासासँ) से कि, से की?

कृष्णानन्द- (अखवार उनटबैत। आंगुरसँ देखबैत।) देखियौ। चिन्है छिऐ एकरा?

राजदेव- (दुनू आँखितरहत्थीसँ पोछिगौरसँ देखए लगैत।) ई तँ चिन्हरबे जकाँ बूझिपड़ैए। कनी गौरसँ देखए दाए हाथमे तानल बन्दूक जकाँ बूझिपड़ैए।

कृष्णानन्द- हँ, हँ कक्का, पुरानो आँखिअछितैयो चिन्हिगेलिऐ।

राजदेव- कनी औरो नीक जकाँ देखए दाए। गामक तँ एक्के गोरे सीमा चौकीपर रहैए। ब्रह्मदेव।

कृष्णानन्द- (दुनू आँखिक नोर पोछैत।) हँ, हँ कक्का। हुनके छातीमे गोली लगलनि। मुँह देखै छिऐ खुजल। देश भक्तिक नारा लगा रहलाहेँ।

राजदेव- (तिलमिलाइत।) बौआ, तोरे संगे ने पढ़ै छेलह।

कृष्णानन्द- संगिये छेलाह। अपना क्लासमे सभ दिन फस्ट करै छलाह। हाइये स्कूलसँ मनमे रोपिनेने छेलाह जे देश भक्त बनब। से निमाहियो लेलनि।

राजदेव- बौआ, देश भक्तक अर्थ संकीर्ण दायरामे नै बिस्तृत दयरामे छै। ओना अपन-अपन पसन आ अपन-अपन विचार सभकेँ छै।

कृष्णानन्द- कनी फरिछा कऽ कहियौ?

राजदेव- देखहक, खेतमे पसीना चुबबैत खेतिहर, सड़कपर पत्थर फोड़ैत बोनिहार, धारमे नाओ खेबैत खेबनिहार सभ देश सेवा करैत अछि, तँए देशभक्त भेलाह।

कृष्णानन्द- (नमहर साँस छोड़ैत।) अखन धरिसे नै बुझै छलिऐ।

राजदेव- नहियो बुझैक कारण अछि। ओना देशक सीमाक रक्षा बाहरी दुश्मनक (आन देशक) रक्षाक लेल होइत अछि। मुदा जँ मनुखमे एक-दोसराक संग प्रेम जगत तँ ओहुना रक्छा भऽ सकैए। मुदा से नै अछि।

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत।) हँ से तँ नहिये अछि।

राजदेव- मुदा देशक भीतरो कम दुश्मण नै अछि। एहेन-एहेन रूप बना मुँह-दुबर लोकक संग कम अत्याचार केनिहारोक कमी नै अछि।

कृष्णानन्द- से केना?

राजदेव- देखते छहक जे जइ देशमे खाइ बेतरे लोक मरैए, घर दवाइ, पढ़ै-लिखैक तँ बात छोड़ह। तइ देशमे ढोल पीटनिहार देश सेवक सभ अपन सम्पत्तिचोरा-चोरा आन देशमे रखने अछिओकरा किबुझै छहक?

कृष्णानन्द- हँ, से तँ ठीके कहै छी।

राजदेव- केहेन नाटक ठाढ़ केने अछिसे देखै छहक। आजुक समैमे सभसँ पैघ आ सभसँ बिकराल समस्या देशक सोझा ई अछिजे सभकेँ जिबै आ आगू बढ़ैक समान अवसर भेटै।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ जरूरिये अछि।

राजदेव- एक्के दिस एहेन बात नै ने अछि?

कृष्णानन्द- तब?

राजदेव- समाजोमे अछि। कनी गौर कऽ कऽ देखहक। पैछले बर्ख ने ब्रहमदेवक बिआह भेल छलै?

कृष्णानन्द- हँ। बरियातियो गेल रही। बड़ आदर-सत्कार भेल रहए।

राजदेव- एक्कोटा सन्तान तँ नै भेलैक अछि।

कृष्णानन्द- नै। हमरा बुझने तँ भरिसक दुनू परानीक भेँटो-घाँट तेना भऽ कऽ नै भेल हेतै। किअए तँ गाम अबिते खबड़िभेलै जे सीमापर उपद्रव बढ़िगेल, तँए सबहक छुट्टी केन्सिल भऽ गेल। बेचारा बिआहक भोरे बोरिया-विस्तर समेटिदौगल।

राजदेव- अखन तँ नव-धब घटना छै तँए जहाँ-तहाँ बाह-बाही हेतै। मुदा प्रश्न बाह-बाहीक नै प्रश्न जिनगीक अछि। बेटाक सोग माए-बापकेँ आ पतिक दुख स्त्रीकेँ नै हेतै?

कृष्णानन्द- हेबे करतै।

राजदेव- एना किअए कहै छह जे हेबे करतै। जहिना एक दिस मनुख कल्याणक धरम हेतै तहिना दोसर दिस माए-बाप अछैत बेटा मृत्युक दोष, समाज सेहो देतनि।

कृष्णानन्द- (गुम होइत मुड़ी डोलबए लगैत।)

राजदेव- चुप भेने नै हेतह। समस्याकेँ बुझए पड़तह। जे समाजमे केना समस्या ठाढ़ कएल जाइए। तोंही कहह जे ओइ दूध-मुँहाँ बच्चियाक कोन दोख भेलै।

कृष्णानन्द- से तँ कोनो नै भेलै।

राजदेव- समाज ओकरा कोन नजरिये देखत?

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत।) हूँ-अ-अ।

राजदेव- हुँहकारी भरने नै हेतह। भारी बखेरा समाज ठाढ़ केने अछि। ओइ, बच्चियाक भविष्य देखनिहार कियो नै अछि, मुदा......?

कृष्णानन्द- मुदा की?

राजदेव- यएह जे, एक दिस कलंकक मोटरीसँ लादिदेत तँ दोसर दिस जीनाइ कठिन कऽ देत।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ करबे करत।

राजदेव- तोही कहह, एहेन समाजमे लोकक इज्जत-आवरू केना बचत?

कृष्णानन्द- (मुड़ी डोलबैत। नमहर साँस छोड़ि।) समस्या तँ भारी अछि।

राजदेव- नै, कोनो भारी नै अछि। सामाजिक ढर्ड़ाकेँ बदलए पड़त। विघटनकारी सोच आ काजकेँ रोकिकल्याणकारी सोच आ काज

करए पड़त। तखने हँसैत-खेलैत जिनगी आ मातृभूमिकेँ देखत।

कृष्णानन्द- (मुस्की दैत।) संभव अछि।

राजदेव- ई काज केकर छिऐ?

कृष्णानन्द- हँ, से तँ अपने सबहक छी।

राजदेव- हँ। ऐ दिशामे एक-एक आदमीकेँ डेग बढ़बैक जरूरतिअछि।

पटाक्षेप

चारिम दृश्य

(भागेसर दरबज्जा सजबैत। बहाड़िसोहाड़िचारिटा कुरसी लगौलक। कुरसी सजा भागेसर चारूकात निहारिनिहारिगौर करैत। तहीकाल बालगोविन्द आ राधेश्यामक प्रवेश।)

भागेसर- आउ, आउ। कहू कुशल?

(कुरसीपर तीनू गोरे बैसैत।)

बालगोविन्द- (राधेश्यामसँ।) बौआ, बेटी हमर छी, वहीन तँ तोरे छिअ। अखन समए अछितँए......?

भागेसर- अपने दुनू बापुत गप-सप्प करू।

(कहि, उठिकऽ भीतर जाइत।)

राधेश्याम- अहाँक परोछ भेने ने......। जाबे अहाँ छिऐ, ताबे हम.....।

भागेसर- नै, नै। परिवारमे सभकेँ अपन-अपन मनोरथ होइ छै। चाहे छोट भाए वा बेटाक बिआह होउ आकिबेटी- बहिनक होउ।

राधेश्याम- हँ, से तँ होइते अछि। मुदा अहाँ अछैत जते भार अहाँपर अछिओते थोड़े अछि। तखन तँ बहिन छी, परिवारक काज छी, कोनो तरहक गड़बड़ भेने बदनामी तँ परिवारेक हएत।

बालगोविन्द- जाधरिअंजल नै केलौंहेँ ताधरिदरबज्जा खुजल अछि। मुदा से भेलापर बान्ह पड़िजाइत अछि। तँए......?

राधेश्याम- हम तँ परदेश खटै छी। शहरक बेवहार दोसर रंगक अछि। गामक की बेवहार अछिसे नीक जकाँ थोड़े बुझै छी। मुदा तैयो......?

बालगोविन्द- मुदा तैयो की?

राधेश्याम- ओना तँ बहुत मिलानीक प्रश्न अछिमुदा किछु एहेन अछिजेकर हएब आवश्यक अछि?

बालगोविन्द- आब कितोहूँ बाल बोध छह, जे नै बुझबहक। मनमे जे छह से बाजह। मन जँचत कुटुमैती करब नै जँचत नै करब। यएह तँ

गुण अछिजे अल्पसंख्यक नै छी।

राधेश्याम- किअल्पसंख्यक?

बालगोविन्द- जइ जातिक संख्या कम छै ओकरा संगे बहुत रंगक बिहंगरा ठाढ़ होइत अछि। मुदा जइ काजे एलौंहें तेकरा आगू बढ़ाबह। किकहलहक?

राधेश्याम- कहलौं यएह जे कमसँ कम तीनक मिलानी अवस होइ। पहिल गामक दोसर परिवारक आ तेसर लड़का-लड़कीक।

बालगोविन्द- जँ तीनूक नै होइ?

राधेश्याम- तँ दुइयोक।

बालगोविन्द- जेहने अपन परिवारक बेवहार छह तेहने अहू परिवारक अछि। गामो एकरंगाहे बूझिपड़ैए। लड़का-लड़की सोझेमे छह।

राधेश्याम- तखन किअए काज रोकब?

(जगमे पानिआ गिलास नेने भागेसर आबि, टेबुलपर गिलास रखिपानिआगू बढ़बैत। गिलास हाथमे लऽ।)

बालगोविन्द- नीक होइत जे पहिने काजक गप अगुआ लेतौं।

भागेसर- अखन धरिअहूँ पुरने विध-बेवहारमे लटकल छी। कुटुमैती हुअए वा नै मुदा दरबज्जापर आबिजँ पानिनै पीब, ई केहेन हएत?

(पानिपीबैत। तहीकाल झमेलिया चाह नेने अबैत। पानिपिआ दुनू गोटेकेँ चाहक कप दैत भागेसर अपनो कुससीपर बैस चाह पीबए लगैत।)

बालगोविन्द- समए तेहेन दुरकाल भऽ गेल जे आब कथा-कुटुमैतीमे कतौ लज्जतिनै रहैए। बेसीसँ बेसी चारिआना कुटुमैती कुटुमैती जकाँ होइए। बारह आनामे झगड़े-झंझट होइए।

भागेसर- हँ, से तँ देखते छी। मुदा हवा-बिहाड़िमे अपन जान नै बँचाएब तँ उड़िकऽ कतएसँ कतए चलिजाएब, तेकर ठेकान रहत।

बालगोविन्द- पैछला लगनक एकटा बात कहै छी। हमरे गामक छी। कुल-खनदान तँ दबे छन्हिमुदा पढ़िलिख परिवार एते उन्नतिकेने अछिजे इलाकामे कियो कहबै छथि।

भागेसर- वाह।

बालगोविन्द- लड़को-लड़की उपरा-उपरी। कमसँ कम पचास लाखक बियाहो भेल छलै। मुदा खाइ-पीबै बेरमे तते मारि-पीट भेल जे दुनूकेँ मन रहतनि।

भागेसर- मारिकिअए भेल?

बालगोविन्द- पुछलियनिते कहलनिजे बिआह-दानमे कोनो रसे नै रहिगेल अछि। बरियाती सदिखन लड़कीबलाकेँ निच्चाँ देखबए चाहैत तँ सरियाती बरियातीकेँ। अही बीचमे रंग-बिरंगक बखेरा ठाढ़ कऽ मारिपीट होइए।

भागेसर- एहेन बरियातीमे जाएबो नीक नै।

बालगोविन्द- सज्जन लोक सभ छोड़िदेलनि। मुदा तैयो किबरियाती कम जाइए। तते ने गाड़ी-सबारी भऽ गेल जे हुहुऔने फिरैए।

भागेसर- खाइर, छोड़ू दुनियाँ-जहानक बात। अपन गप करू।

बालगोविन्द- हमरेसँ पुछै छी। कन्यागत तँ सदतिचाहै छथिजे एकटा ॠण उताड़ैमे दोसर ॠण ने चढ़िजाए। अपने लड़काबला छिऐ। केना दुनू परिवारक कल्याण हएत, से तँ......?

भागेसर- दुनियाँ केम्हरो गुड़ैक जाउ। मुदा अपनोले तँ किछु करब। आइ जँ बेटा बेच लेब तँ मुइलापर आगिके देत। बेचलाहा बेटासँ पैठ हएत।

बालगोविन्द- कहलिऐ तँ बड़बढ़िया। मुदा समाजक जे कुकुड़चालिछै से मानता दुनू परिवार मिलिजुलिकाज ससारिलेब। मुदा नढ़िया जकाँ जे भूकत तेकर किकरबै?

भागेसर- हँ से तँ ठीके, पैछलो नीक चलनिआ अखुनको नीक चलनिअपनाए कऽ अधला चलनिछोड़िदेब। किअए कियो भूकत। जँ भूकबो करत तँ अपन मुँह दुखाओत।

(बरक रूपमे झमेलियाक प्रवेश..)

बालगोविन्द- बेटा-बेटीक बिआहमे समाजक पाँचो गोटे तँ रहैक चाहिऐ ने?

भागेसर- भने मन पाड़िदेलौं। घरे-अंगना आ दुआरे-दरबज्जापर तते काज

बढ़िगेल जे समाज दिस नजरिये ने गेल।

बालगोविन्द- आबे किभेल, बजा लिअनु। समाजकेँ तँ लड़का देखले छन्हि, हमहूँ दुनू बापुत देखिये लेलौं।

भागेसर- केहेन लड़का अछि?

बालगोविन्द- एते काल बटोही छलौं तँए बटोहिक संबंध छल। मुदा आब संबंध जोड़ैक विध शुरू भऽ गेल तँए संबंधी भेल जा रहल छी।

भागेसर- किकहू बालगोविन्दबाबू, जिनगिये तते रिया-खिया गेल अछिजे बेलक बेली जकाँ बनिगेल छी।

बालगोविन्द- (ठहाका मारि) समधि एक भग्गू कहलिऐ। छोटोसँ पैघ बनैए आ पैघोसँ छोट बनैए। छोट-छोट कीड़ी-मकौरी समैक संग ससरैत-ससरैत नमहर बनिजाइए। तहिना कलकतिया आकिफैजली आम सरही होइत-होइत तेहेन भऽ जाइए जे बिसवासे ने हएत जे ई फैजली बंशक बड़वड़िया बीजू छी।

भागेसर- बालगोविन्दबाबू, गप-सप्प चलिते रहत समाजोकेँ बजा लइ छियनि।(समाज दिस नजरिदोड़बैत भागेसर आंगुरपर हिसाब जोड़ैत..) ओह फल्लां दोगला अछि। (पुन: आंगुरपर जोड़ि) ओह फल्लाँ तँ दुष्ट छी दुष्ट। फल्लाँ पक्का दलाल छी। साला बेटी बिआहक बात बना रोजगार खोलने अछि। परिवारक बीच जातिहोइए आकिसमाजक बीच। जेकर विचार नीक रस्ते चलए ओ किअए ने समाज बनाबए।

बालगोविन्द- समधि, किअए अटकिगेलौं?

भागेसर- बालगोविन्दबाबू, लोक तँ समाजेमे रहिसमाजक संग चलत मुदा बिआह सन पारिवारिक यज्ञमे जँ समाजक लोक धोखा दइ तखन?

बालगोविन्द- समधिकहलौं तँ बेस बात, मुदा जहिना ई समाज अछितहिना हमरो अछि। ठीके कहलौं जे बिआह सन काज जइसँ समाजक एक अलंग ठाढ़ होइत तइमे उचक्का सभक उचकपन्नी औरो सुतरैए। बर-कनियाँक देखा-सुनीसँ लऽ कऽ सिनुरदान धरिकिछु ने किछु बिगाड़ैक कोशिश करबे करैए।

भागेसर- एकटा बात मन पड़िगेल। भाए-बहिनक बीचक कहै छी। (भागेसरक बात सुनिराधेश्याम चौंक गेल..)

राधेश्याम- किकहलखिन भाए-बहिन।

भागेसर- बाउ, अहाँक तँ बहिन छी। भाए-बहिनक बीच बरावरीक जिनगी हेबाक चाही से तेहेन- तेहेन वंशक बतौर सभ जन्म लेने जाइऐ जे......?

राधेश्याम- की जे?

भागेसर- अपन पड़ोसीक कहै छी। सौ-बीघाक परिवारमे पाँच भाए-बहिनक भैयारी। बीस बीघा माथपर भेल। बहिन सभसँ छोट। सौ बीघा स्तरक लड़कीकेँ दू बीघाबला परिवारमे भाए सभ वियाहिदेलक।

राधेश्याम- पिता नै बुझलखिन?

भागेसर- सएह ने कहै छी। पिता जँ पुत्रपर बिसवास नै करथितँ किनकापर करथि। तते चढ़ा-उतड़ी चारू बेटा कहलकनिजे पिता अपन भारे सुमझा देलखिन। बेटा सभ केहेन बेइमान जे बहिनक कोढ़-करेज काटिअपन कनतोड़ी सजबए लगल।

राधेश्याम- पछातियो पिता नै बुझलखिन?

भागेसर- बुझिये कऽ किकरितथिन। मुइने एला वैद तँ किदनकेँ कऽ जेता।

राधेश्याम- बड़ अन्याय भेल!

भागेसर- अन्याय किभेल अन्याय जकाँ। ओही सोगे माए जे ओछाइन धेलखिन से धेनेहिरहिगेलखिन। पितो बौरा कऽ वृन्दावन चलिगेलखिन।

राधेश्याम- बाबू, जहिना माए-बापक बेटी- छियनितहिना बहिन हमरो छी। ओना खाइ-पीबै आ लत्ता-कपड़ाक दुख अखन धरिनहिये भेलै, मुदा आगूक तँ नै कहिसकै छियनि। दिन-रातिमाइयक संग काज उदममे रहैए। माइयक समकश तँ नै भेल मुदा दू-चारिसालमे भइये जाएत। सभ सीख-लिख माइयेक छै।

भागेसर- अहाँ कतऽ रहै छिऐ?

राधेश्याम- ओना बाहरे रहै छी। मुदा आन बहरबैया जकाँ नै जे गाम-घर, सर-समाज छोड़िदेलौं। जे कमाइ छी परिवारमे दइ छिऐ।

बालगोविन्द- समैध अबेर भऽ जाएत। कम-सँ-कम पाँचटा बच्चोकेँ शोर पाड़ियौ। अदौसँ अपना ऐठामक चलनिअछि। (गुरूकूलक अध्ययन समाजक काजक अनुकूल होएत)(दरबज्जेपर सँ भागेसर बच्चा सभकेँ शोर पाड़लखिन..)

(पाँच-सातटा बच्चा अबैत अछि..)

एकटा बच्चा- झमेलिया भैयाक बिआह हेतै कक्का?

भागेसर- हँ।

बच्चा- बरियाती हमहूँ जेबे करब।

भागेसर- तोरो लऽ जाए पड़तौ।

बच्चा- लऽ जाएब।

पटाक्षेप

पाँचम दृश्य

(बालगोविन्दक घर। पत्नी दायरानीक संग बालगोविन्द बैसल..)

बालगोविन्द- ओना जे बात भेल तइसँ कुटुमैती हेबे करत। मुदा समए-साल तेहेन भऽ गेल जे वियाहो मड़बासँ लड़का रुसिफुलिकऽ चलिजाइए।

दायरानी- हँ, से तँ होइए। मुदा जहिना कुत्ता-बिलाइकेँ धिया-पुता खेनाइ देखा फूसला कऽ लऽ अनैए तहिना मनुखो फूसलबैक ने.....?

बालगोविन्द- नै बुझलौं। कनी फड़िछा दियौ।

दायरानी- कोन काज सिरपर अछिआ कोन काज लधऽ चाहै छी। जखने सिरपड़क काज छोड़िदोसर काजमे लागब तखने घुरछी लगए लागत। जखने घुड़छी लागत तखने काज ओझरा-पोझरा जाएत।

बालगोविन्द- तखन?

दायरानी- जतेटा आ जेहन काज रहए ओइ हिसाबसँ काज सम्हारिली। अखन बिआहक काज अछितँए घटक भायकेँ बजा सभ गप कहिदियनु।

बालगोविन्द- अपनो विचार छल भने अहूँ कहलौं।

दायरानी- युग-जमाना अकानिकऽ चलैक चाही। जँ से नै करब तँ पाओल जाएब।

बालगोविन्द- कहलौं तँ बेस बात मुदा एहनो तँ होइ छै जे गाममे जखन चोर चोरी करए अबैए तखन ठेकयौने रहैए कतौ आ अपनेसँ हल्ला दोसर दिस करैए। लोक ओमहर गेल आ खाली पाबिचोर ठेकियेलहा घरमे चोरी कऽ लइए।

दायरानी- हँ, से तँ होइए। मुदा बेसी पिंगिल पढ़ने तँ काजो पछुआइये जाइए। तँए ओते अगर-मगर नै करू। एतबो नै आँखिअछिजे देखबै।

बालगोविन्द- किदेखबै?

दायरानी- बिना घटक्के केकर बिआह होइ छै। समाजमे जखन सभ करैए तखन अपनो नै करब तँ ओहो एकटा खोटिकरमे हएत किने।

बालगोविन्द- किखोटिकरमा?

दायरानी- अनेरे लोक की-कहाँ बाजत। तहूमे जेकर जीविका छिऐ ओ अपन मुँह किअए चुप राखत। छोड़ू ऐ-सभ गपकेँ। जाउ अखने घटक भायकेँ हाथ जोड़िकहबनिजे बेटी तँ समाजक होइ छै, कोनो तरहेँ समाजक काज पार लगाउ।

बालगोविन्द- (बुदबुदाइत) कतऽ नै दलाली अछि। एक्के शब्दकेँ जगह-जगह बदलिबदलिसभ अपन-अपन हाथ सुतारैए। तखन तँ गरा ढोल पड़ल अछि, बजबै पड़त।

दायरानी- बजैत दुख होइए। अगर जँ लोक अपनो दिन-दुनियाँक बात बूझिजाए तैयौ बहुत हेतै। खाइर, देरी नै करू, बेरू पहर ओ सभ औता, अखुनका कहल नीक रहत। तँए अखने कहिअबियौन।

(घटक भाइक दलानपर बैस जोर-जोरसँ पत्नीकेँ कहै छथि। आंगनसँ पत्नी सुनतिछथि..।)

घटक भाय- समए कतऽ-सँ-कतऽ भागिगेल आ डारिक बिढ़नी छत्ता जकाँ समाज ओतै-के-ओतै लटकल अछि। आब ओ जुग-जमाना अछिजे बही-खाता लऽ बैसल रहू आ आमदनी कतऽ तँ सवा रूपैया। बाप रे, समैमे आगिलागिगेल।

पत्नी- (अंगनेसँ) ओहिना डिरिआएब। रखने ने रहू बेटाकेँ चूड़ा-दही खाइले। जेकर बेटा कमासुत छै ओकरा देखै छिऐ जे कतऽ-सँ-कतऽ आगू चलिगेल। सपनोँ सपनाएल रही जे बड़दक संगे भरिदिन बहैबलाक बेटा ट्रेक्टरक ड्राइवरी करतै। दू-सेरक जगह दू हजारक परिवार बना लेतै।(बालगोविन्दकेँ देखिघटक भाय दमसिकऽ खखास करैत। घटक भाइक खखास सुनिपत्नी बूझिगेलखिन। अपन बातकेँ ओतै रोकिदेलनि।)

बालगोविन्द- गोड़ लगै छी भाय।

घटक भाय- जीबू-जीबू। भगवान खेत-खरिहान, घर-दुआर भरने रहथि। एहनो

समैकेँ अहाँ नहिये गुदानलियनि। अहाँ सन-सन लोक जे समाजमे भऽ जाथितँ कतऽ-सँ-कतऽ समाज पहुँचिजाएत।

बालगोविन्द- भाय, सिरपर काज आबिगेल। तँए बेसी नै अँटकब।

घटक भाय- केहेन काज?

बालगोविन्द- बेटीक बिआह करब। उहए लड़की देखए बरपक्ष आबिरहल छथि। तहीले....!

घटक भाय- अहाँकेँ नै बुझल अछिजे अही समाज लेल खुन सुखा रहल छी। किपागल छी। जेकरा लूरिने भास छै से शहर-बजार जा-जा महंथ बनल अछिआ हम समाज धेने छी।

बालगोविन्द- हँ, से तँ देखते छी। तँए ने......।

घटक भाय- अच्छा बड़बढ़िया। ओना हम अपनो कानपर राखब मुदा बुझिते छी जे दस-दुआरी छी। जँ कहीं दोसर दिस लटपटेलौं तँ बिसरियो जा सकै छी। तँए अबैसँ पहिने केकरो पठा देबै।

बालगोविन्द- बड़बढ़िया। जाइ छी।

घटक भाय- ऐह, एहिना केना चलिजाएब। एते दिन ने लोक तमाकुले बीड़ीपपर दरबज्जाक इज्जत बनौने छलै मुदा आब ओइसँ काज थोड़बे चलत। बिना चाह-पीने केना चलिजाएब?

बालगोविन्द- अहाँकेँ किअइले उपराग देब। बहुत काज अछि। तँए माफी मंगै छी अखन छुट्टिये दिअ।

(बालगोविन्द विदा भऽ जाइत..)

घटक भाय- (स्वयं) भगवान बड़ीटा छथिन। जँ से नै रहितथितँ पहाड़क खोहमे रहैबला केना जीवैए। अजगरकेँ अहार कतऽ सँ अबै छै। घास-पातमे फूल-फड़ केना लगै छै....।

(बालगोविन्दक दरब्ज्जा। चौकीपर ओछाइन ओछाएल।

बालगोविन्द- सभ किछु तँ सुढ़िया गेल। कने नजरिउठा कऽ देखहक जे किछु छुटल ने तँ...।

राधेश्याम- (चारू कात नजरिखिड़बैत..) नजरिपर तँ किछु ने अबैए। (कने

बिलमि) हँ, हँ, एकटा छुटल अछि। पएर धोइक बेवस्था नै भेल।

बालगोविन्द- बेस मन पाड़िदेलह। तँए ने नमहर काज (परिवारक अगिला काज) मे बेसी लोकसँ विचार करक चाही। दसेमे ने भगवान वसै छथि। जखने दसटा आँखिदस दिस घुमै छै तखने ने दसो दिशा देखिपड़ै छै।

(भागेसर आ यशोधरक आगमन..)

बालगोविन्द- जहिना समय देलौं तहिना पहुँचिओ गेलौं। पहिने पएर-हाथ धो लिअ तखन निचेनसँ बैसब।

भागेसर- तीन-कोस पएरे चलैमे मनो किछु ठेहिया जाइ छै।

(दुनू गोटेकँ पएर-हाथधोइतेकाल घटक भाइक प्रवेश..)

घटक भाय- पाहुन सभ कहाँ रहै छथि?

बालगोविन्द- भाय, नवका कुटुम छथि। ओना अखन रीता (बेटी) बिआह करै जोकर नहिये भेल छै, मुदा ऐ देहक कोनो ठेकान अछि। बेटा-बेटीक बिआह तँ माए-बापक कर्ज छी। अपना जीवैत कतौ अंग लगा देने भगवानो घरमे दोखी नै ने हएब।

घटक भाय- कुटुम, अपना ऐठामक जे बुइधविचार अछिओ दुनियाँमे कतऽ अछि। एक-एक काज ओहन अछिजेहन पत्थर-कोइलाक ताउमे धिपा लोहाक कोनो समान बनैत अछि।

भागेसर- हँ, से तँ अछिये।

घटक भाय- अपने ऐठाम खरही आ ठेंगासँ लड़का-लड़की (वर-कन्या)केँ नापिबिआह होइत अछि।

यशोधर- आब ओ बेवहार उठिगेल।

घटक भाय- हँ, हँ, सएह कहै छी। बेवहार तँ उठिगेल मुदा ओइ पाछू जे विचार छल से नै ने मरिगेल। विचारवानक बखारीक अन्न तँ वएह ने छियनि।

राधेश्याम- काका, कने फरिछा दियौ। एक तँ नव कवरिया छी तहूमे परदेशी भेलौं।

घटक भाय- बौआ, तोहूँ बेटे-भतीजे भेलह। बहुत पढ़ल-लिखल नहिये छी। लगमे बैसा-बैसा जे बाबा सिखौलनिसे कहै छिअ। तहूँमे बहुत बिसरिये गेलौं।

राधेश्याम- जे बुझल अछिसएह कहियौ।

घटक भाय- समाजमे दुइओ आना एहेन परिवार नै अछिजिनका परिवारमे बच्चाक टिप्पणिबनै छन्हि। बाकी तँ बाकिये छथि। अदौसँ लड़का अपेक्षा लड़की उम्र कम मानल गेल। जेकरा तारीख-मड़कूमामे नै नापमे मानल गेल।

राधेश्याम- जँ दुनूमे सँ कोनो बढ़नगर आ कोनो भुटाड़िहुअए, तखन?

घटक भाय- बेस कहलह। तँए ने अबेवहारिक भऽ गेल। सदिखन समाजकेँ आँखिउठा अहितपर नजरिराखक चाहिये।

भागेसर- हँ, से तँ चाहबे करी। मुदा विचारलो बात तँ नहिये होइ छै।

घटक भाय- बेस बजलौं। ऐमे दुनू दोख अछि। विचारनिहारोकेँ विचारैमे गड़बड़ होइ छन्हिआ राजादैवक (प्रकृतिनिअम) दोख सेहो होइत अछि। अखने देखियौ गोर-कारी रंगक दुआरे कते संबंध नै बनिपबैत अछि। एतबो बुझैले लोक तैयार नै जे मनुख रंगसँ नै गुणसँ बनैत अछि।

यशोधर- हँ, से तँ होइते अछि। हमरो गाममे हाथमे सिनुर लेल बरकेँ बरक बाप गट्टा पकड़िघिचने-घिचने गामे चलिगेल।

घटक भाय- की कहू कुटुम नारायण देखैत-देखैत आँखिपथरा रहल अछि। मुदा अछैते औरूदे उरीसक दबाइ पीब उरीसे जकाँ मरिये जाएब से नीक हएत। तहिना देखब जे कुल-गोत्रक चलैत कुटुमैती भङठिजाइए।

यशोधर- हँ, से तँ होइए।

घटक भाय- देखियौ, अपना बहुसंख्यक समाजमे अखनो धरिमुँजबानियेक कारोबार चलिआबिरहल अछि। जे नीक-अधला बेरबैक विचार गड़बड़ा गेल। जते मुँह तते बात। जइठाम जे मुँहगर तइठाम तेकरे बात चलत। चाहे ओ नीक होय किअधला।

यशोधर- कनी नीक जकाँ बुझा कऽ कहियौ?

घटक भाय- (बालगोविन्द दिस देख..) बालगोविन्द, आइ तँ कुटुम-नारायण सभ रहता किने?

बालगोविन्द- एक तँ अबेर कऽ एलाहेँ। तहूमे अखन धरितँ आने-आने गप-सप्प चलल। काज पछुआएले रहिगेल अछि।

घटक भाय- आइ तँ कनियेँ देखा-सुनी हएत किने?

बालगोविन्द- हँ। मुदा बिआहसँ तँ बीध भारी होइए किने!

घटक भाय- हँ। से तँ होइते छै। अखन जाइ छी। काल्हिसवेरे आएब। तखन जना-जे हेतै से हेतै।

भागेसर- काज जँ ससरिजाइत तँ चलिजैतौं।

घटक भाय- एहनो जाएब होइ छै। जखन कुटुमैती जोड़िरहल छी तखन एना धड़फड़ेने हएत।

पटाक्षेप

छठम दृश्य

(राजदेवक दरबज्जा। चद्दरिओढ़िराजदेव पड़ल)

सुनीता- बाबा, बाबा-यौ। आँखिलागल अछि। (एक हाथमे लोटा दोसरमे गोटी)

राजदेव- नै। जगले छी। दबाइ अनलह।

सुनीता- हँ। लिअ।

राजदेव- (चौकियेपर बैस गोटी खा पानिपीब कऽ) नाहकमे परान गमबै छी। कहू जे जानिकऽ बेसाहब तँ मरब नै। मुदा करबे किकरू। जानिकऽ कियो थोड़े कुत्ता बधिया करए जाइए। जखन कुकुड़चालिनाकपर ठेक जाए छै तखने ने कियो जान अबधारिजाइए।

सुनीता- पाकल आम भेलौं। आबो जँ अपन पथ-परहेज नै राखब तँ कते दिन जीब?

राजदेव- बुच्ची, तोहूँ आब बच्चा नै छह जे बात टारिदेबह। मुदा किकरब? जखन समाजमे रहै छी तखन जँ बिआहमे बरियाती नै जाएब, मरलापर कठिआरी नै जाएब, तँ समाज आगू मुँहेँ ससरत केना।

सुनीता- से तँ बुझलौं, मुदा.....?

राजदेव- मुदा यएह ने जे जे जुआन-जहान अछि ओ जाए। से अपना घरमे अछि। तोँ बेटिये जातिभेलह, श्याम बच्चे अछिबाबू परदेशेमे छथुन तखन तोँही कहह जे किकरब?

सुनीता- (कनी गुम्म भऽ) हँ, से तँ अछि। मुदा समाजो तँ नमहर अछि। बूढ़-पुरान जँ नहियो जेताह तैयो किनको काज थोड़े रुकतनि।

राजदेव- कहै तँ छह ठीके मुदा तेहेन-तेहेन ढोढ़ाइ-मंगनू सभ समाजमे फड़िगेल अछिजे अपेक्षा (संबंध) जोड़त कितोड़ैये पाछू पील पड़ल अछि।

सुनीता- से की?

राजदेव- बिनु-विधक विध सभ आबिरहल अछिआ नीक विध मेटा रहल अछि। देखै छी तँ तामसे शपथ खा लइ छी जे आब बरियाती नै जाएब। मुदा फेर सोचै छी जे नै जेवइ तँ अपना बेर के जाएत।

सुनीता- बरियाती जाएब कोनो अनिवार्ये छै?

राजदेव- छइहो आ नहियो छै। समाजमे दुनू चलै छै। हमरे बिआहमे ममे टा बरियाती गेल रहथि। सेहो बरियाती नै घरवारी बनिकऽ।

सुनीता- तखन फेर एते बरियाती किअए जाइ छै?

राजदेव- सेहो कहाँ गलती भेलै। जही लग्नमे हमर बिआह भेल ओहीमे श्यामो दोसकँ भेलनि। पचाससँ उपरे बरियाती गेल रहनि।

सुनीता- गोटी खेलौंहँ। कनी काल कल मारिलिअ। खाइयोक मन होइए?

राजदेव- अखन तँ नै होइए। मुदा गोटी खेलौं हेन तँए किकहबह?

सुनीता- जे मन फुरए सएह करब।

(कृष्णानन्दक आगमन)

कृष्णानन्द- बड़ अनखनाएल जकाँ देखै छी कक्का? चद्दरिकिअए ओढ़ने छी?

राजदेव- कोनो किसुखे ओढ़ने छी। मन गड़बड़ अछि।

कृष्णानन्द- की भेल हन?

राजदेव- एक तँ पेट गड़बड़ भेने मन गड़बड़ लगैए। तहूमे तेहेन-तेहेन किरदानी सभ लोक करैए जे होइए अनेरे किअए जीवै छी।

कृष्णानन्द- हँ, भने मन पड़िगेल। कामेसर भायकँ पानिचढ़ै छन्हि।

राजदेव- किअए। केहेन बढ़ियाँ तँ रातिमे संगे बरियाती पुरलौं। तइ बीच किभऽ गेलइ।

कृष्णानन्द- अपने तँ नै पुछलियनिमुदा कात-करोटसँ भाँज लागल जे बरियाती जाइसँ पहिने खूब चढ़ा लेने रहथि। ओही निसाँमे अढ़ाइ-तीन सय रसगुल्ला आ किलो चारिएक माछ देलखिन।

सुनीता- (खिसिया कऽ) जिनगीमे कहियो देखने छेलखिन किबरियातिये भरोसे ओरिआएल छलाह।

कृष्णानन्द- घरवारियो सबहक दोख छै?

सुनीता- से केना?

कृष्णानन्द- ओते ओरियान किअए करैए। जँ रहिजे जेतै तँ बरियाती कऽ सबारी कसत जे दुइर भऽ जाएत। तइसँ नीक ने जे दुइर नै हुअए दइ छै।

सुनीता- तखन तँ दबाइयो आ डाक्टरोक ओरियान करए पड़तै किने?

राजदेव- कोन बातमे ओझरा गेलह। अच्छा अखन किहालत छै?

कृष्णानन्द- आब तँ बहुत असान भेलनि। पहिने तँ दमे नै धरए दैत छलनि। डॉक्टर कहलखिन जे आँत फाटिजइतनि। मुदा समहरलाह। गुण भेलनिजे तीन-चारिबेर छाँट भऽ गेलनि। ओहिना सौंसे-सौंसे रसगुल्ला खसलनि।

सुनीता- ओहने-ओहने लोक समाजकेँ दुइर करैए।

कृष्णानन्द- से केना?

सुनीता- जे आदमी ओहन पेट बनौत ओ ओते पुराओत कतऽ सँ। जँ पुराइयो लेत तँ ओते पचवइयो लए ने ओते समए चाही। जँ खाइये-पचबैमे समए गमा लेत तँ काज कखन करत।

राजदेव- (कने गरमाइत..) अच्छा बुच्ची, कृष्णानन्द कक्काकेँ चाह पिआबहुन?

सुनीता- अहूँ पीबै?

राजदेव- केना नै पीबै।

सुनीता- अहूँक पेट तँ गड़बड़े अछि। जँ कहीं औरो बेसी भऽ जाए?

राजदेव- से तँ ठीके कहै छह। मुदा ई केहेन हएत जे दरबज्जापर असकरे कृष्णानन्द चाह पीता आ अपने संग नै देबनि।

सुनीता- भाँज पुरबैले कम्मे कऽ लेने आएब। सेहो सरा कऽ पीब।

(सुनीता चाह आनए जाइत..)

कृष्णानन्द- कक्का, जेहो काज लोक नीक बूझिकरैए, ओकरो तेना ने करए लगैए जे जते नीक बूझिकरैए ओइसँ बेसी अधले भऽ जाइ छै।

तइपर सँ अचार जकाँ रंग-बिरंगक चहटगर नवका-नवका काज।

राजदेव- नै बूझिसकलौं।

कृष्णानन्द- पहिने दुसँझु बरियाती होइत छलै। जँ कहीं पहिल दिन अबेरो भऽ गेल आ कोनो तरहक गड़बड़ियो होइत छलै तँ दोसर दिन सम्हारिकऽ सभ समेटिसरिया लैत छल।

राजेदव- जँ दू दिना काज एक दिनमे भऽ जाए तँ नीके ने भेल।

कृष्णानन्द- यएह सोचिने एकसँझु भेल। मुदा पाछूसँ तेहेन हवा मारलक जे कोसो भरिजाइबला बरियाती गाड़ी-सबारी दुआरे लग्नक समए टपा-टपा पहुँचैए।

राजदेव- हँ, से तँ होइए।

कृष्णानन्द- (सह पाबिसहटि) एतबो बुझैले लोक तैयार नै जे कोस भरिजाइमे आधा-पौन घंटा पएरे लगत। तइ टपैमे चरिचरि घंटादेरी भेल, कहू जे केहेन भेल?

राजदेव- हौ, कि कहबह। 'इसकी मुइला माघमे।'तेहेन-तेहेन नवकविरया मनुख सभ भऽ गेलहें, जे माघोमे गाम-गमाइत बिना चद्दरिये जाएत। आब कहह जे अपना ऐठामक विचारधारा रहल जे कोनो वस्तुक उपयोग जरूरति भरिकरी। तइठाम जँ घरवैया अपन चद्दरिदइ छन्हितँ अपने कठुएता, जँ नै दइ छन्हितँ आनकेँ दरबज्जापर कठुआएब उचित हएत।

कृष्णानन्द- हँ, से तँ देखै छिऐ।

राजदेव- आब बरियातियेमे देखहक। पहिने दू दिना बरियातीक चलनिछल। जे एकसँझु भऽ गेल। मूल प्रश्न अछिजे दुनू पक्षक (बर आ कन्या पक्ष) किसभ क्रिया-कलाप (बिध-बेवहार) छै। केकरा सुधारैक, केकरा तोड़ैक आ केकरा बचा कऽ रखैक जरूरति अछिसे नै बूझि, कविकाठी सभ समए नै बँचब वा समैक दुरूपयोग कहिएक दिना चलनिचलौलक। मुदा.....।

कृष्णानन्द- मुदा की?

राजदेव- तोहूँ तँ आब बच्चा नहिये छह। कते कठिआरी गेले हेबह।

कृष्णानन्द- कक्का, मुरदा जरबए कठिआरी जरूर गेलौंहेँ, मुदा मुरदा.....?

राजदेव- हँ, हँ, कठिआरी गेलह। मुरदा जरबए नै?

कृष्णानन्द- एते तँ जरूर करै छी जे शुरूमे खुहरी चढ़ेलौं आ पछातिपँचकठिया फेकिघरमुँहाँ भेलौं।

राजदेव- तइ बीच?

कृष्णानन्द- कने बगलिकऽ बैस ताशो खेलाइ छी आ चाहो-पान करै छी।

राजदेव- मुदा, जे मुइलाह हुनकर जीता-जिनगीक चर्चक गबाह एकोटा नै रहै छी।

कृष्णानन्द- नै बुझलौं कक्का?

राजदेव- समाजमे केकरो मुइने लोककेँ सोग होइ छै। सोगक समए मन नीक-अधला बीचक सिमानपर रहैए। जहिना ग्रह-नक्षत्रक बीचक सिमानपर कोनो नव चीज देखिपड़ैत तहिना होइए। एकठाम बैस जँ दस गोटेक बीच जीवन-मरणक चर्च भऽ गेल तँ ओ इतिहास बनिगेल। जइ अनुकूल आगू चर्च हएत।

कृष्णानन्द- मन थोड़े रहत।

राजदेव- मन रखए चाहबै तखन ने रहत। ओहुना तँ बिसरनहिछी। अपना ऐठाम मौखिके ज्ञान बेसी अछि। जे नीको अछिआ अधलो। अच्छा छोड़ह, बहकिगेलह।

कृष्णानन्द- हँ, तँ मुरदा जरबैबला कहै छेलिअ?

राजदेव- मुरदा जरबैकाल देखबहक जे चेरा जारनएक भागसँ चुल्हिजकाँ नै लगाओल जाइत अछि, एक्के बेर सौंसे शरीरक तर-ऊपर लगाओल जाइए। मुदा मुर्दा सिकुड़िसिकुड़िछोट होइत अंतमे गेन जकाँ भऽ जाइए। जेकरा किछु जरौनिहार गेन जकाँ गुरका कऽ छोड़िदैत अछिआ किछु गोटे ओकरो जरा दैत अछि।

कृष्णानन्द- अखन काजे जाइ छलौं तँ सोचलौं जे कक्काकेँ समाचार सुनौने जाइ छियनि। मुदा अहूँ तँ चहकल थारी जकाँ झनझनाइते छी।

पटाक्षेप

सातम दृश्य

(बालगोविन्दक दरबज्जा। चाह-पान, सिगरेट चलैत। बालगोविन्द आ राधेश्याम परसैत। भागेसर यशोधर एकठाम बैसल। बीचमे घटक भाय आ दोसर भाग समाजक रूपलाल, गरीबलाल, धीरजलाल बैसल।)

घटक भाय- कुटुम नारायण जेकरा जे जुड़वन लिखल रहै छै से भइये कऽ रहै छै।

यशोधर- हँ, से तँ होइ- छै, मुदा.....?

रूपलाल- मुदा की?

यशोधर- लिखिनिहार के छथि?

गरीबलाल- एना अनाड़ी जकाँ किअए बजै छी। छठिहारे रातिविधाता सभ किछु लिख दइ छथिन।

यशोधर- जँ वएह लिखै छथिन तँ एना उटपटांग किअए लिखै छथिन।

धीरजलाल- किउटपटांग?

(चाहक गिलास आ पानक तसतरी लेने राधेश्याम जा रखिपुन: आबिबैसैत अछि)

यशोधर- एक तँ लेन-देन तते बढ़िगेल अछिजे जहिना चुमुक लोहा बीचक वस्तुकेँ नै पकड़िलोहेटाकेँ खिंचैत अछितहिना पाइयेबला नीक पाइ खर्च कऽ नीक घर (सुभ्यस्त) पकड़ैत अछिभलहिं लड़का-लड़कीक जोड़ा बैइसै किनै बैइसै।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) हँ, से तँ होइ छै। मुदा किछु लाभो तँ होइ छै।

यशोधर- किलाभ होइ छै?

घटक भाय- जातिपाजिक (कुल-खनदानक) दबाएल लोक अपनासँ नीक घरमे पाइक बले कुटमैती कऽ लैत अछि।

यशोधर- तइ काल विधाता किछु ने सोचलनिजे कान्ही लगा जोड़ा लगवितथिन। जइसँ जातिपाँजिक रक्षा सेहो होइत।

घटक भाय- कुटुम नारायण जहिना मनुक्खोक मन सदतिकाल एके रंग नै रहैए तहिना ने हुनको (विधतोक) होइत हेतनि। जखन असथिर रहैत हेता तखन नीक विचार मनमे अबैत हेतनिआ जखन टेन्शनमे रहैत हेता तखन किछुसँ किछु कऽ दैत हेताह।

गरीबलाल- घटक भाय, एहेन बात नै छै। कोनो ई औझुका विचार छिऐ किपुरना विचार छिऐ। कहलो गेल अछि'अजा पुत्रं बलिं दत्वा देवो दुर्बल घातक:।'

घटक भाय- छोड़ू ऐ सभ गपकेँ। ई सभ बैसारी कविकाठीक गप छी। जइ काजे एकठाम भेल छी पहिने एकरा निपटा लिअ। हमहूँ धड़फड़ाएल छी, बजौनिहार दुआरपर आशा बाट तकैत हेताह।

भागेसर- जिनगीमे पहिल बेर बेटाक बिआह करै छी। ओना समाजमे बहुत काज देखलौंहेँ मुदा समाज किगामक सीमा भरिक अछि। जातिजाति, कुल-खानदान, अड़ोसी-पड़ोसी, कते कहब। फाँकक-फाँक बनल अछिजइसँ एक काज (बिआह) होइतो एक रंग बेवहार नै अछि। तइसँ सभ दिना काज रहितो अपन बिध-बेवहार नीक-नहाँतिनै बूझिपबै छी।

घटक भाय- हँ, से होइते अछि। अहाँ तँ अहीं भेलौं जे सालमे दस-बीस काजक अगुआइ करै छी तैयो कतेठाम भसिया जाइ छी। खाइर, ऐ सभकेँ छोड़ू।

यशोधर- हँ, हँ। अपने काज आगू बढ़ाउ।

घटक भाय- जहिना शुभ-शुभ कऽ बिआहक चर्च उठल, आ अखन धरिचलिरहल अछितहिना आगूओ चलैत रहए।

बालगोविन्द- लाख टकाक गप कहलिऐ घटकभाय। आगूक शुभारम्भ अहीं करियौ।

घटक भाय- देखू किछुए मास छोड़िबिआहक दिन सभ मास होइए। मुदा सभसँ नीक मास फागुन होइए।

रूपलाल- ठीके कहलिअ, शिवरात्रिक मास सेहो छी।

घटक भाय- कोनो किधड़फड़ा कऽ कहलौं, से बात नै अछि। किछु सोचिये कऽ कहलौं। खरमास (बैसाख-जेठ) मे आगिछाइक डर रहै छै।

जाड़मे जाड़ेक आ आन-आन मासमे सहो किछु ने किछु गड़वड़ रहिते अछि।

यशोधर- जहिना नीक मौसम रहैए तहिना खेबो-पीवोक समान पर्याप्त रहैए। टेन्ट-समेनाक बदला गाछियो-कलमसँ काज चलिजाइत अछि।

घटक भाय- की सबहक विचार अछिकिने?

(सभ- हँ-हँ)

एकटा काज सुढ़िआएल। आब बरियातीक गप उठबै छी। किबालगोविन्द, कुटुम नारायणकेँ कते बरियाती अबैले कहै छियनि?

बालगोविन्द- पाँचो गोटेसँ वएह काज होइए जे पान सए गोटेसँ। तखन देखते छी हम्मर आँट-पेट। कौआसँ खइर लुटाएब तइसँ नीक जे ओते बेटिए-जमाएकेँ अगुआ कऽ देब जे नै सभ दिन तँ किछुओ दिन सुख भोग करत।

यशोधर- बड़ सुन्नर बात बालगोविन्द बाबूक छन्हि। मुदा....?

गरीबलाल- कनी खोलिकऽ बजिऔ।

यशोधर- अहाँ समाजक बात नै जनै छी मुदा हमरा समाजमे एहेन अछिजे जातिमे घरही एक गोटे, परजातिमे हित-अपेक्षित आ परिवारक जे संबंधी छथि, से तँ एबे करताह।

बालगोविन्द- एते तँ उचिते भेल।

गरीबलाल- उचित तँ कहिदेलिऐ भाय, मुदा पैघ घोड़ाक पैघ छानो होइ छै। अहाँ पचघारा छी मुदा जइठाम सए-दू-सए घरक होय तइठाम?

यशोधर- ई तँ ठीके कहलिऐ मुदा छोट-छीन काजक दुआरे समाज टूटिजाए, सेहो नीक नहिये।

घटक भाय- जेहने सबाल ओझराएल अछितेहने सोझराएलो अछि।

यशोधर- से की?

घटक भाय- ओझरी दू रंगक होइ छै। एकटा, जहिना टीक किझोंटामे चिड़चिड़ी लगने होइत अछिआ दोसर, डोरीक भीड़ी जकाँ

होइए। एकटा ओरी पकड़िलिअ काज करैत चलू। कखनो कथीले ओझराएत। चाहे तँ काजे सम्पन्न भऽ जाएत वा डोरिये सधिजाएत।

गरीबलाल- बालगोविन्द भाय, उक्खरिमे मुड़ी देलौं तँ मुसराक डर। समाजक नीकक लेल जँ अपन प्राणो गमबए पड़ै तैयो नीके। बिआह तँ समाजक उत्सव छी।

घटक भाय- एक लाखक विचार गरीबलालक छन्हि। एकठाम बैस खेलौं, रहलौं आ नीक-अधलाक गप-सप्प केलौं, ई उत्सव नै तँ किभेल।

यशोधर- घटकभाइक विचार टारैबला नै छन्हि।

(विचहिमे)

धीरजलाल- जखन उत्सव छी तखन नीक तँ नीक भेल मुदा अधला गप-सप्प किअए करत?

घटक भाय- (ठहाका मारि) तू अखैन अनाड़ी छह धीरज, मुदा जे बात उठौलह ओ आगूक लेल काज औतह। तँए पहिने तोरे गप कहै छिअह।

(घटकभाइक विचार सुनिसभ साकांच भऽ घटक भाय दिस कतऽ लगैत..)

मुँह चटपटबैत धीरजलाल किछु बाजए चाहैत किगरीबलालक नजरि पड़ल। मुँहक बोल धीरजलाल रोकिलैत)

गरीबलाल- पहिने एकटा बात सुनिलिअ, तखन दोसर पुछहुन।

घटक भाय- बौआ, जहिना नीकक संग-संग अधलो चलैए तहिना अधलाक संग नीको चलैए। तँए दुनू गप चललासँ साधल बात लोक बुझैए।

धीरजलाल- गप झपाएल रहिगेल घटकभाय।

घटक भाय- अपना जनैत तँ कहिदेलियह। भऽ सकैए तूँ नै बुझने हुअ। देखहक पुरुष नारीक संयोगसँ सृष्टिक निर्माण होइए। जेकरा विवेकी मनुख बिआहक बंधनमे बन्हलनि। जे सृष्टिक विकास आ कल्याणक लेल उचित अछि।

धीरजलाल- हँ, से तँ अछिये।

घटक भाय- मुदा एकरे दोसर भाग देखहक। जे, बंधनसँ बाहर अछिओकरा अधला बूझिअंकुश लगाओल गेल। मुदा समाजेक लोक ओकरा राँइ-बाँइ कऽ कऽ तोड़िदेलक।

धीरजलाल- नै बुझलौं भाय?

घटक भाय- पुरुष प्रधान बेवस्था ओकरा संग अन्याय केलक। एक दिस पुरुष कतेको नारीकँ पत्नी बना, संग-संग समाजोमे कुचालिआन-आन नारीक संग चलनिशुरू केलक। जइसँ नरीक डाँड़, टूटिगेल। कते नारी घरसँ निकालल गेल। जे रने-बने बौआइत अछि।

धीरजलाल- भाय, मन तँ औरो गप सुनैक होइए। मुदा जइ काजे एकत्रिक भेल छी से काज आगू बढ़ाउ।

राधेश्याम- मानिलेलौं, जते बरियातीक खगता होन्हितते लऽ कऽ औताह।

घटक भाय- बौआ राधेश्याम, नमहर काज करैमे नै औगताइ आ ने खिसिआइ। जखने अगुतेबह, खिसिएबह तखने काजमे खोंच-खाँच बनए लगतह। कोनो रोग असाध होइए तँ मनुखे ने ओकरो साधमे अनैए।

बालगोविन्द- बौआ, अखन तूँ समाजक तरी-घटी नै बुझबहक। एक तँ नवकविरया छह दोसर गाम छोड़िपरदेश खटै छह। जखन समाजक संग छी तखन वएह ने पारो-घाट लगौताह। बेटी किकोनो हमरे छी आकिसमाजक छियनि।

घटक भाय- बालगोविन्द भाय, हमरा जे धौंजनिसमाजमे होइए से केकरा होइ छै। जँ एहेन धौंजनिदोसराकेँ होइतै तँ पड़ा कऽ जंगल चलिजाइत। मुदा मोह अछिकिने।

बालगोविन्द- कीमोह?

घटक भाय- जइ काजे छी पहिने से फड़िआबह। एक समाजक दोसर समाजसँ मिलन समारोह छी। तँए सामाजिक काज भेल। तइले समाजो अपन रस्ता बनौनहिअछि। कियो भार पूरि, तँ कियो डाल पूरि, तँ कियो असिरवादी दऽ काज पूरबैए।

भागेसर- ऐ लेल चिन्ता करैक नै अछिघटकभाय। अपनो ऐठामसँ तँ डाला भार एबे करत किने। तइ लेल.....।

घटक भाय- सभ कियो सुनिलेलिऐ किने जे बरपक्ष जते बरियाती आनए चहता से मंजूर केलियनि।

(सभ हँ, हँ)

राधेश्याम- (उछलिकऽ) मुदा एकटा बातक फड़िछौट अखने भऽ जाए।

घटक भाय- कथीक?

राधेश्याम- जते खाइ-पीबैक ओरियान करबनिसे खा-पी कऽ जाए पड़तनि।

गरीबलाल- से पहिने ने किअए बरियातीक हिसाब जोड़िलेब। जइ हिसावसँ बरियाती औताह तइ हिसाबसँ ओरियान करब। ने बाइस बचत ने कुत्ता खाएत।

राधेश्याम- कक्का, दोसर बात कहलौं।

गरीबलाल- की?

राधेश्याम- तीन कोसपर गाम छन्हि। पाँच बजेमे जे पएरो चलताह तैयौ आठ बजे आबिजेताह। सभ काज सम्हरल चलतनि।

घटक भाय- बेस बजलह। खाइ-पबैक जे समान दूइर हएत से मोटरी बान्हिकन्हापर लादिदेबनि। अच्छा अखन एतै काजकँ विराम दियौ।

यशोधर- बहुत समए लगिरहल अछि, जते जल्दी काजक रूप रेखा बनिजाएत तते नीक किने।

घटक भाय- हँ, हँ। से तँ नीक। मुदा जहिना कोनो वस्तुक बोझसँ चानिअगिया जाइत अछितहिना ने विचारोक बोझसँ अगिया जाइत अछि। तँए आगूक विचार बढ़बैसँ पहिने एक बेर चाह-पान भऽ जाए।

गरीबलाल- बेस कहलिऐ घटकभाय।

बालगोविन्द- बाउ राधे, चाह बनौने आबह।

(राधेश्याम चाह आनए जाइत अछि।)

गरीबलाल- (मुस्की दैत) तइ बीच किछु रमन-चमन भऽ जाए। अँए-औ घटक भाय, मझौरा बरियातीमे परूँका किभेल रहए?

घटक भाय- बिसरलो बात मन पाड़ै छी। नीकक चर्च लोक दोहरा-तेहरा करैए। अधला बात (काज) बिसरबे नीक।

गरीबलाल- अखन औपचारिक नै अनौपचारिक किछु भऽ जाए।

घटक भाय- (मुस्की दैत) देखियौ, सालमे दस-बीस बिआहक अगुआइ करिते छी मुदा ओहन तँ नै छी जे लुत्ती लगा देव आ ससरिजाएब। जइ काजमे हाथ दइ छी ओइ काजकेँ कइये कऽ छोड़ै छी।

यशोधर- किभेल रहए?

घटक भाय- जिनगीमे पहिल बेर एहेन फेरा लागल। कछुबीक बरियाती मझौरा गेल। ठीक आठ बजे बरियाती पहुँचल। घरवारियो सतर्क रहथि। दरबज्जापर पहुँचते शर्बत चलल। शर्बत चलिते रहै किस्त्रीगण सभ चंगेरामे दूबिधान दीप लेने गीत गबैत पहुँचलीह।

यशोधर- से तँ होइते अछि।

घटक भाय- एतबे भेल। एक दिस बैसारमे बरियाती सभ गिलासपर गिलास शर्बत चढ़बैत तँ दोसर दिस गीतिहाइरो सभ गीतक वाण छोड़ैत। तखने एकटा परदेशिया करामात शुरू केलक।

यशोधर- किकरामात?

घटक भाय- पहिने तँ नै बुझलिऐ मुदा पछातिपता लागल जे ओ बरियातिये रहए। केलक ई जे गीतिहारिक बीचमे पाइ (एक-दू आ पाँचक सिक्का) लुटबए लगल। गीतिहारिक बीच हुड़ भेल। एक्के-दुइये चारिबेर पाइ फेकलक। झल-हन्हार रहबे करै।

यशोधर- से एना किअए केलक?

घटक भाय- सएह ने, कतऽ सँ सीखिकऽ आएल रहै से नै कहि। पाइ बीछैमे गीतो बन्न भऽ गेल। तइपर सँ तना ने तरा-उपरी लोको खसए लगल आ धक्का-धुक्की सेहो हुअए लगल। दूविधान, दीपबला चंगेरा बरक उपरेमे खसल।

गरीबलाल- जे एहेन किरदानी केने रहै तेकरा पकड़िकऽ धोलाइ नै देलक।

घटक भाय- ओहो किअनाड़ी-धुनाड़ी रहै। लुत्ती लगा ससरिकऽ कातमे नुका रहल। घरवाली सभ जखन गीतिहारिसभकेँ पुछलकनितँ ओ सभ हरिअरका कुरताबला नाओं कहलखिन। ओ सभ भजिअबए लगल। मुदा कुत्ता कतौ आगिमे झरकै।

गरीबलाल- तइमे अहाँ केना फँसिगेलिऐ?

घटक भाय- हमरो कुर्त्ता हरियरे रहए। मुदा आब बुझै छी जे गलती कनी अपनो रहए।

गरीबलाल- किगलती अपन रहए?

घटक भाय- अपन गलती यएह रहै जे बरियातीक बीचक नहिकतका कुरसीपर बैसल रही। तीनिचारिगोटे कातेसँ हियबैत रहै। हरिअर कुर्ता देखिलगमे पहुँचिगेल।

यशोधर- अहाँ नै बुझलिऐ।

घटक भाय- से कि कोनो देखिलिऐ नै। भेल जे किछु परसऽ आएल अछि।

यशोधर- किदु पुछबो ने केलिऐ?

घटक भाय- किपुछितिऐ, कोनो शंका रहए। ओहो सभ कि पुछलक। हाँइ-हाँइ कऽ ठुस्से चलबए लगल।

गरीबलाल- (ठहाका मारि..) बेसी ने तँ लागल।

घटक भाय- कोनो किअनाड़ी-धुनाड़ीक ठुस्सा रहए। पाँचे-सात ठुस्सामे तँ बूझिपड़ल जे दिनका तरेगन देखै छी।

यशोधर- बरियाती सभ खाइयेटाले गेल रहए।

घटक भाय- नै, परोछक बात छी, झूठ नै बाजब। बरियातियो सभ तनलाह। मुदा हमहीं रोकलियनि।

गरीबलाल- अहाँ किअए रोकलियनि?

घटक भाय- मारिदंगा कोनो नीक छी। कोनो ठेकान छै जे कते हएत। जँ एहेन भऽ जाए जे काजे नाश भऽ जाए, तखन।

गरीबलाल- हँ, से तँ ठीके।

घटक भाय- ओना पाँचे-सात ठूस्सा ने लागल। जँ दोहराइत तँ बेसियो

लगिसकै छलै। तहूमे जहिना हौहटिकलकैल साले-साल ओही आदमीक ऐठाम अबैत जेकरा ऐठाम खाइ-पीबैक आ सुतै-बैसैक नीक जोगार देखैत। तँए सोचलौं जे कनी सहिये लेने नीक रहत।

(तस्तरीमे चाह लेने राधेश्याम आबिचाह परसैत अछि..)

गरीबलाल- तरे-तर घटक भाय मुस्की मारैत छथि।

(गरीबलालक बात सुनिसभ घटक भाय दिस तकए लगै छथि। अपना दिस तकैत देखिघटकभाइक मुस्की-हँसीमे बदलिगेलनि।

बालगोविन्द- घटकभाय, किछु बजताह।

घटक भाय- एकटा आरो घटना मन पड़िगेल। बरख पाँचे भेल हएत। तमोरियाक कुटुमैती अरड़ियामे भेल रहए। दुनूक अगुआ रही। दुनू चिन्हार।

बालगोविन्द- भेल किसे कहियौ।

घटक भाय- ओइ काजमे दोखी घरबैइये रहए। नाहकमे दोखी बनलौं।

गरीबलाल- किभेल रहए?

घटक भाय- गरीबलाल एक रत्ती तल-बितल भेने काज विगड़िकऽ किसँ-कि भऽ जाइए। एते दिन देखै छेलिऐ जे दोकानदार सभ माथपर नूनक मोटरी आनिजिबैले कारोबार करैत छल। आब देखै छी जे कारोबारिये सभ राजा भऽ गेल। जे जना मन फुड़ै छे से तेना करैए।

गरीबलाल- जे बात कहै छेलिऐ, से कहियौ।

घटक भाय- ओइठीन देखौलक कोनो लड़की आ सिनुदानक बेर दोसर लड़कीकेँ आनिसिनुरदान करबै लगल।

गरीबलाल- ओइठाम तँ बर पक्षक नै रहैत छथितखन केना भाँज खुजल।

घटक भाय- सभ गप देखिनिहार तँ घरपर बाजिचुकल छलाह ने। लड़कीक हुलिया भऽ गेल छलै ने। ओही अनुमानसँ लड़का पकड़िलेलक। कोनो लाथे निकलल आ पित्तीकेँ कहिदेलक।

गरीबलाल- तखन तँ बड़का सरेड़ा भेल हएत?

घटक भाय- सरेड़ा किसरेड़ा जकाँ भेल। मारिपीट जे भेल से तँ भेवे कएल जे तीन बरख तक दुनू गामक सीमा रोका गेल। बिआह बेटा-बेटीक खेल नै दुनूक जिनगीक छी। ओना तेहेन जुग-जमाना आबिगेल अछिजे खेलोसँ खेल जिनगी बनिगेल अछि।

गरीबलाल- कनी फरिछा कऽ कहियो घटकभाय?

घटक भाय- किफरिछा कऽ कहब। अंतिम समए विद्यापतियो लिखलनि'माधव हम परिणाम निराश।' तहिना छातीपर हाथ रखिआनो-आन बाजथि। अच्छा अखन एतै विराम दियौ। खाइ-पीबैक बेरो भऽ गेल आ देहो-हाथ अकड़िगेल।

राधेश्याम- तीमनो-तरकारी ठरिकऽ पानिभऽ गेल हएत।

घटक भाय- कुटुम नारायण तँ ठरलो खा कऽ पेट भरिलेताह मुदा हमरा तँ कोनो गंजन गृहणी नहिये रखतीह।

पटाक्षेप

आठम दृश्य

(बालगोविन्दक दरबज्जा। बालगोविन्द, भागेसर आ यशोधर बैस खेती-पथारीक गप करैत..)

बालगोविन्द- देखले दिनमे दुनियाँ कतऽ-सँ-कतऽ भागिगेल।

यशोधर- से की?

बालगोविन्द- अपना ऐठामक किसान खेती-गिरहस्तीक सभ कथुक बीआ अपने बनबै छलाह खेती करै छलाह। तीन सालसँ जे सुनै छी, से किकहू।

यशोधर- खोलिकऽ कने कहियौ?

बालगोविन्द- तेसर साल हमरा गाममे बहुत गोरे तीन सए रूपैये किलो मकैयोक आ धानोक बीआ, पँचगुना अपजा कहिकऽ अनलनि। खेती केलनि। शुरूहेमे ढक-बखारी सभ बनबा-बनबा रखलनि। ले बलैया मकैमे बाइले ने लागल।

यशोधर- से कि भेलै?

बालगोविन्द- जहिना रिनिया-महाजन अगर-मगर करैत रहताह तहिना सभ गिरहस्त अपनेमे कहा-कही शुरू केलनि।

यशोधर- किकहा-कही शुरू केलनि?

बालगोविन्द- कियो कहथिन जे खाद जे देलिऐ से माटिजाँच करौलिऐ? तँ कियो बाजथिजे जते पावरक दबाइ फसिलमे दइ छलिऐ तइसँ बेसी पावरक देलिऐ किकम? तँ कियो बाजथिजे बीआ बाग करैसँ पहिने दबाइ मिलौलिऐ। किकहब उपजाक बात बिसरिसभ अपनेमे सालो भरिरक्का-टोकी करैत रहलाह।

यशोधर- तब तँ बाढ़िरौदीक संग तेसरो आफत आबिगेल।

बालगोविन्द- तेसरे किअए कहै छिऐ। चारिमो ने कहियो।

यशोधर- चारिम की?

बालगोविन्द- अहाँ सभ दिस नहरिनइए, तँ ने नजरिपर आएल हेन। हमरा

सभ दिस केहेन खेल होइए से सुनू। जखन खूब बरखा हएत तखन नहरिक मुँह (फाटक) खोलिदेत आ जखन रौदी हएत तखन कहत जे नहरिमे पानिये ने छै।

यशोधर- जना अपना ऐठम पढ़ल-लिखल लोक छथितना जँ दसो प्रतिशत बुधिक (ज्ञानक) उपयोग अपना क्षेत्रक लेल लगबितथितँ किसँ-किदेखितिऐ। मुदा जेकर कपारे फुटिजाएत तेकर कते भरोस।

(राधेश्याम चाह लेने अबैत अछि। तहिकाल गरीबलालक संग घटक भाय सेहो अबै छथि..)

भागेसर- घटको भाय आबिये गेलाह।

घटक भाय- चाहमे हमरो अंश छल तँए दुनूक मिलानी भेल। दाना-दानामे खेनिहारक अंश लिखल अछिमुदा.....?

गरीबलाल- घटकभाय, अहाँमे यएह अवगुन अछिजे करैले जाइ छी कोनो काज आ करए लगै छी कोनो काज। जइ काजे एलौं तेकरा पहिने सोझराउ। दोसरो काज करए जाएब।

घटक भाय- अखन तँ सभ जुटबो ने केला अछितइ बीच काजक चर्च उठाएब नीक हएत।

गरीबलाल- जँ ओ लोकनिनै आबथितँ छोड़िदेब नीक हएत।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) कहलौं तँ बेस बात, मुदा जमात करए करामात।

गरीबलाल- ई तँ ठीके कहलिऐ मुदा जमातसँ पहिने जमात बनैक प्रक्रियापर नजरिदिअए पड़त।

घटक भाय- से की?

गरीबलाल- जहिना बड़का आम सरही होइत-होइत बीजू बड़बड़िया भऽ जाइए। तहिना बिज्जुओ बनैत-बनैत बड़का फैजली-सजमनिया बनिजाइए। तहिना छी जमात। बनैत-बनैत बनत आ मेटाइत-मेटाइत मेटाएत। समाजिक काज छोड़िसभ अपना नून-रोटीमे लगिसमाजकँ तहस-नहस कऽ देने अछितइठाम जमात तकने काज चलत।

घटक भाय- बेस बजलौं गरीबभाय। एकटा बात मन पड़ल। पड़ोसिया गाममे

रामरूपक माए मरल। अज-गजबला लोक भोज केलक। गामे-गाम एकघारा-दूघारा जाति। एगारह गाममे तीन सए एगारह पंच भेल।

गरीबलाल- फेर अहाँ बौआए लगलौं।

घटक भाय- बौआइ कहाँ छी। अगिला बात सुनिने लियौ। गेलौं तमोरिया स्टेशनपर टहलए। रामरूपक बेटाकेँ आ गनोरक बेटाकेँ झगड़ा करैत देखलौं। बच्चा बूझिदुनूकेँ छोड़बैत पुछलिऐ जे किअए झगड़ा करै छह। गनोरक दादीक सराधक भोज सेहो भेल। ओकाइत तँ एकरंगाहे दुनूक। ओ दुइये गामक भोज केने रहए। दुइये गाममे तोहर सए पंच भेल। तहीले झगड़ा।

गरीबलाल- (मुस्की दैत) अनकर झगड़ा अपना कपारपर लऽ लेलौं।

घटक भाय- लेलौं किलेला जकाँ। बकार बन्न भऽ गेल। भीतरे-भीतर मन खिसिया कऽ कहए जे अनेरे अनकर झगड़ा अपना सिर बेसाहिलेलौं। भने अलकतरा बैसाएल प्लेट-फार्म छइहे दुनू फरिछा लिअ। मुदा सेहो आब केना हएत।

गरीबलाल- फेर केलिऐ की?

घटक भाय- कहलिऐ जे बौआ ताबे थमहह। कनी बैंकक काज अछि। हूसिजाएत। ई तँ कनी अगातियो-पछाति भऽ सकैए मुदा ओ (बैंक) तँ नै हएत।

गरीबलाल- मानिलेलक दुनू?

घटक भाय- बानरक बटबारा (पनचैती) भऽ गेल। जहिना रोटी बराबर करैमे सौंसे रोटी बानर खा गेल तहिना हुअए लगल।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक्के बात एक गोटे मानिलिअए तँ दोसर तत्-मत् करैत अगर-मगर करैत, कोना-छिन्ना निकालिसबाल उठा दिअए। मुदा हमरो बहाना तँ भरिगर रहए तँए हड़बड़ करैत किछु कहबो करिऐ किछु नहियो कहिऐ।

गरीबलाल- दुनूक नजरिकेहेन रहए?

घटक भाय- दुनूक नजरिजते चढ़ल बूझिपड़ै ओतबे उतरलो। तइसँ शंका हुअए जे परोछ भेलापर कहीं फेर ने फँसिजाए। फेर हुअए जे पनचैती भेने सोलहो आना तँ नहिये फरिआएत। ओ जँ फरिआएत तँ अपने दुनूसँ।

गरीबलाल- जे नीक होइत से ने किरतौं।

घटक भाय- जाबत बरतन ताबत बरतन।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- जाधरिधोती वा साड़ी सिबियो कऽ काज चलैए ता धरिएकटा समस्या (धोती कीनैक) तँ हटल रहैए।

गरीबलाल- मुदा धोतीक जरूरतितँ सबदिना छी, कते दिन टारल जा सकैए।

घटक भाय- हँ, से तँ छी। मुदा कोनो काजो करैक (धोतियो किनैक) तँ अनुकूल समए होइत अछि। अच्छा छोड़ू ऐ गपकेँ। ओ सभ जँ नहियो एला तँ किहेतै। नै पान तँ पानक डंटियेसँ तँ काज चलिये जाइ छै। घुमा-फिरा कऽ सभ तँ छीहे।

गरीबलाल- हँ, से तँ छी मुदा दाउ-गीरकेँ कोनो गर भेटक चाही।

घटक भाय- से किकोनो तेहेन काज छी। दुइये परिवारक काज छी जँ दुनू राजी-खुशी सहमत भऽ करथितँ तेसरकेँ किचलत।

भागेसर- हमरो समए बहुत लगिगेल। एक घंटाक काजमे जे दिनक दिन लगा देब सेहो नीक नै। तहूमे काजक दौर छी सइयो रंगक जोगार-पाती करए पड़त। जँ एहिना समए लगैत गेल तखन बान्हल दिन (निर्धारित समए) मे काज केना हएत?

गरीबलाल- हँ, शुरूहे लग्नमे काज हेबाक चाही चिक्कन-चुनमुन तँ पछातियो भऽ सकै छै। ओना अपनो चलैत-चलैत चिक्कन भऽ जाइए।

बालगोविन्द- घटकभाय, जखन एते गप भइये गेल तखन एक-सँझु बरियाती रहता किदू-सँझु आकितीन-सँझु।

घटक भाय- (मुड़ी डोलबैत) हमर नजरिये नै ओम्हर गेल छल मुदा इहो तँ दमगरे सबाल अछि।

राधेश्याम- जखन सगतरिसभठाम एक-सँझु भऽ गेल तखन दुसँझु तीन-सँझु अनेरे चलाएब छी।

घटक भाय- बौआ कहलह तँ बड़ सुन्नर बात मुदा तोही कहअ जे जखन बरियाती पहुँचैए तखन शर्बत ठंढा-गरम, चाह-पान, सिगरेट गुटका चलैए। तइपर सँ पतोरा बान्हल जलपान, तइपर सँ पलाउओ आ भातो, पूड़िओ आ कचौड़ियो, तइपर सँ रंग-बिरंगक तरकारियो आ अचारो, तइपर सँ मिठाइयो आ माछो-मासु, तइपर दहियो, सकड़ौड़िओ आ पनीरो चलैए।

राधेश्याम- किअए एते जोड़बै छी?

घटक भाय- जोड़बै कहाँ छिअह। जे चलैए से कहै छिअह। आब तोहीं कहह जे एक दिनक खेनाइ एते भेल?

राधेश्याम- नै केना भेल? कियो किमोटरी बान्हिघरपर लऽ जाइ छथिआकिपेटेमे दइ छथिन।

घटक भाय- दइ तँ छथिन पेटेमे मुदा जँ सभ दिन एहिना देथिन तँ कोरोओ-बत्ती घरमे रहतनिआकिओहो पेटेमे चलिजेतनि। नै जँ एहने हाथी सन सभ भऽ जाए तँ हरबहना बड़द कतऽ सँ आनब। हाथीसँ बड़ काज लेब तँ देह-हाथ डोलबैत सबारी करब।

गरीबलाल- (मुस्कुराइत) सबारियो तँ जरूरिये अछि?

घटक भाय- (खिसिया कऽ मुदा हँसैत..) सबारियो नीक लगै छै समैये पाबिकऽ। भरिदिन जँ खलासी-डरेबर जकाँ सबारिये कसने रही तँ डरेबरे-खलासी हएब कियात्रा केनिहार यात्री।

गरीबलाल- कते दूर यात्रा करैक अछिजे लोक यात्री बनिचलत। 'मियाँ दौर मसजित।'

बालगोविन्द- 'गरीबलाल अहाँकेँ कचकचबै छथिघटकभाय। अहूँ तेहने छी जे सभ गपकेँ धइये लइ छिऐ। जइ काजे सभ एकत्रित भेलौं तेकरा आगू बढ़ाउ।

घटक भाय- (सह पाबि..) कतबो गरीबलाल कचकचेता तइसँ किहम कब-कबा जाएब। गरीबलाल एक घाटक पानिक सुआद बुझै छथि। हमरा जकाँ सतरह घाटक सुआद थोड़े बुझथिन।

राधेश्याम- एकसँझु नीक किदुसँझु आकिओइसँ बेसी।

घटक भाय- बौआ, सँझुकेँ दिना बना दहक। एक दिना किदू दिना कि तीन दिना। जँ तीन दिना भेल तँ बहत्तरिघंटाक चक्र भेल। चौबीस घंटाक दिन होइए तँ एक चक्रमे अनेक अछि। किछु छोड़िकिछु जोड़िआ किछु सुधारिएक चक्रमे आनल जा सकैए।

गरीबलाल- आब किपहिलुका जकाँ लोककेँ ओते पलखतिछै जे पएरे बत्तीस-बत्तीस कोस भोज खाइले जाइत। एक दिना बढ़ियाँ।

घटक भाय- गरीब लाल, साँपोसँ टेढ़-बौकली लोकक चालिछै।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक दिनोकेँ एक रतुक बना देलक।

गरीबलाल- चौबीस घंटाकेँ बारहमे बाँटल जा सकैए किने?

घटक भाय- बँटैक तराजुए ढील-ढिलाह अछि। कखनो कऽ डोरी ओझरा जाइ छै तँ बेसिये जोखा जाइ छै आकिकम्मे जोखाइ छै।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- एक तँ भगवानेक काज आ बोलमे अन्तर छन्हिदोसर मनुख तँ आरो पँजिया कऽ लिड़ी-बीड़ी करैए।

गरीबलाल- से की?

घटक भाय- कनी नजरिउठा कऽ देखबै तँ बूझिपड़त जे कोनो मासक दिन नमहर भऽ जाइए आ कोनो मासक राति। तखन केना अधा-अधीमे बँटबै।

गरीबलाल- एकरा छोड़ू। दोसरपर आउ।

घटक भाय- (मुँह बिजकबैत..) मनुख तँ मनुखे छी। एतबो होश नै जे रतुका यज्ञ संध्याक गीतसँ शुरू होइत अछिआ दिनुका परातीसँ। से होइए किसे तजबीज केलिऐहें?

गरीबलाल- नै?

घटक भाय- तेज सबारी भेने तीन कोसक बरियाती तीन बजे भोरमे पहुँचैए। आब अहीं कहू जे पराती बेरमे संध्या होइ। तइपर सँ दिनका यज्ञ मानबै आकिरतुक।

गरीबलाल- एहेन जंगल-पहाड़ काटिसड़क बनाओल हएत।

घटक भाय- (मुस्की दैत) नै किअए हएत। अनजान-सुनजान महाकल्याण। जे नीक बूझिमे आओत सएह ने नीक भेल। तहूमे असगर-दुसगरमे गड़बड़ाइयो सकैए मुदा पाँच गोटे बैस जँ विचार करब तँ कनी-मनी झुस-झास भऽ सकैए।

राधेश्याम- जँ शुभ लग्नमे बिआह नै हएत तँ बरियाती सभ मारि खेता।

घटक भाय- जहिना टायरगाड़ीक बड़दकेँ आनो-आनो गामक खच्चा-खुच्ची आ बान्ह-सड़क टपैक भाँज बुझल रहै छै तहिना ने छी। खाइर शुभ-शुभ कऽ काज सम्पन्न हुअए।

गरीबलाल- घटकभाय, अपना सभ समाज छी किने? समाजिक बंधनमे बान्हिजिनगीक अंग छी। मुदा परिवारक काजक भार तँ परिवारेपर रहतनि।

घटक भाय- रहबे करतनिकिने। समाज परिवारक बीच जे संबंध छै तेकरे पहरुदार छी किने? नीक करता नीक कहबनिअधला कऽ अधलो कहबनिआ सजाएओ देबनि।

बालगोविन्द- (मुस्कुराइत) जहिना अखन धरिसभ काज शुभ-शुभ कऽ चलिरहल अछितहिना आगूओ चलैत रहए।

भागेसर- नचारिये बिआह कऽ रहल छी। तँए......?

घटक भाय- किनचारिये?

मनोहर- कते दिनसँ पत्नी बीमार चलिरहल छथि। बाहरक काज अपने सम्हारिलइ छी, मुदा घर-अंगनाक काज राइ-छित्ती होइए।

घटक भाय- बालगोविन्द, जहिना संगीक काज नीक-अधलामे संग देब छी तहिना ने सरो-समाज आ कुटुमो-परिवार छी। जते जल्दी सम्हारिसकी ओते जल्दी सम्हारिलिअ। आठम दिन सेहो नीक लग्न अछि। जँ सम्हरिजाए तँ सम्हारिलिअ।

बालगोविन्द- बड़वढ़िया।

पटाक्षेप

नवम दृश्य

(राजदेवक दरबज्जा। नजरिनिच्चाँ केने कुरसीपर राजदेव मने-मन किछु सोचबो करैत आ कखनो कऽ दहिना हाथ उठा आंगुरपर हिसाब जोड़ए लगैत। बजैत तँ नै मुदा ठोर पटपटबैत।)

सुनीता- बिनु दूधेक चाह छी। कहुना कऽ पीब लिअ।

राजदेव- दूध नै छेहल।

सुनीता- अमरस्साक समए छी, फाटिगेल।

राजदेव- दूध फाटिगेलह तँ नेबोए दऽ देलहक ने। अच्छा जे छह सएह नीक। एते दिन चाह पेय छल आब तँ अम्मल बनिगेल। नै पीने मने ढील भऽ जाइये। उत्तरबारिटोल दिससँ जनीजातिक जेर अबैत देखने छेलिऐ। से कतऽ सँ अबै छलइ?

सुनीता- हकार पुरिकऽ।

राजदेव- कथीक हकार। केकरा अइठीनसँ।

सुनीता- भागेसर कक्काक बेटाक बिआह भेलनि, वएह कनियाँ देखिदेखिअबै छलइ।

राजदेव- बिआहै जोकर बेटा कहाँ भेल छलै?

सुनीता- वियाहोक कोनो सीमा-नाङरिछै। देखबे करै छिऐ जे कोनो-कोनो जातिछेटगर बेटा-बेटी भेने बिआह करैए आ कोनो-कोनो जातिबच्चेमे कऽ लइए।

राजदेव- हँ, से तँ देखै छिऐ। तोहू तँ आब बच्चा नहिये छह, कओलेजमे पढ़ै छह। दुनूमे नीक कोन?

सुनीता- दुनू नीको अछिआ अधलो।

राजदेव- से केना?

सुनीता- जुआन बेटा-बेटीक बिआह ऐ दुआरे नीक अछिजे अपन भार उठा चलै जोकर भेल रहैए।

राजदेव- हँ, से तँ रहैए। फेर अधला केना भेल?

सुनीता- जतेक जे भार उठा कऽ चलैक चाही से नै चलैए, तँए अधला।

राजदेव- तू तँ किताबक भाषामे बुझबै छह। कनी विलगा कऽ कहह।

सुनीता- एक ध्रुवीय (एक सीमा) देश-दुनियाँक अछिआ दोसर ध्रुवीय (दोसर सीमा) परिवार आ व्यक्तिक। आजुक जे परिवारक रूप-रेखा बनिरहल अछिओइमे सभ छुटिरहल अछि। सिकुड़िकऽ लोक तते छोट परिवार बनबए चाहैए जे मनुखक संबंधे चौराहापर ढेड़िआएल गाड़ी-सबाड़ी जकाँ भेल जा रहल अछि।

राजदेव- फेर किताबेक भाषा बाजए लगलह।

सुनीता- नै। परिवारमे मनुखक जन्म होइत अछि। माए-बाप जन्मदाता होइत छथिन। मुदा भऽ किरहल अछिजे या तँ विचारे वा लड़िझगड़िमाए-बाप छोड़िपरिवार फुटा लइए। जहिना सोनक सूत मिला कऽ सक्कत जौड़ बनिजाइए। जइसँ भारी-भारी बोझ बान्हल जा सकैए ओइ जौरकेँ उधाड़िवा तोड़िएक-एक रेशाकेँ बेरैबिते एते कमजोर बनिजाइत अछिजे कोनो काजक नै रहैत। तहिना भऽ रहल अछि।

राजदेव- (मुड़ी डोलबैत..) कहै तँ छह ठीके, मुदा.....?

सुनीता- मुदा-तुदा किछु ने। सोझ रास्ता बनिरहल अछि। जे बेटा-माए-बाप, परिवार छोड़िसकैए ओ समाज, देश-दुनियाँकेँ केना पकड़िसकैए। जँ से तँ मातृभक्त, पितृभक्त, समाजभक्त, देशभक्त बनिकेना सकैए।

राजदेव- (मुड़ियो डोलबैत आ कनडेरिये आँखिये सुनीताकेँ देखबो करैत..) ठीके कहै छह। अच्छा बाल-बिआहकेँ केना-नीक आ केना अधला कहै छहक।

सुनीता- बाल-विवाहक परिस्थितिभिन्न अछि। जे परिवार सम्पन्नताक (आर्थिक) दृष्टिये जते अगुआएल अछिओ ओते बाल-विवाहसँ दूरो अछि। मुदा जे परिवार जते पछुआएल (आर्थिक दृष्टिये) अछिओइमे ओते बेसी छै।

राजदेव- किअए?

सुनीता- अपना सबहक समाजो, परिवारो आ व्यक्तियो वैदिक रीतिनीतिसँ

बनिचलैत आबिरहल अछि। जइमे ढेरो दाउ-घाउक संग हवो-बिहाड़िलगैत आएल अछि। बालो-विवाहक पाछू सएह कारण अछि।

राजदेव- कनी बिलगा कऽ कहह।

सुनीता- जिनगीक उताड़-चढ़ाव होइत छै। जना बच्चाक सेवा माए-बाप करैत अछितखन ओ अपन जिनगी सम्हारै जोकर नै रहैए। जखन बेटा-बेटी जुआन (कमाइ-खटाइबला) होइत अछिआ माए-बापक लौटानी अबैत अछि। तखन सहाराक जरूरतिहोइ छै। जहिना दुनियाँमे मनुखकेँ एबा काल (बच्चा) दोसराक सहाराक जरूरतिहोइत अछितहिना जेबोकाल होइत अछि।

राजदेव- (मुड़ी डोलबैत..) हँ, से तँ होइते अछि। हमहीं छी जँ तू सभ नै देखबह तँ कतेक दिन जीब।

सुनीता- वएह माए-बाप अपन आचार-विचार निमाहैत बेटा-बेटीकेँ दोसराक अंग (संगी) लगा अपन भार ढील कऽ लैत अपनाकेँ बेटा-बेटीक रीनसँ उरीन हुअए चाहैत।

राजदेव- एते धड़फड़ा कऽ किअए उरीन हुअए चाहैत। जखन किदुनू अखन आश्रिते अछि।

सुनीता- जइठाम जिनगी जीवैक ने साधन अछिआ ने खोज-खबड़िलेनिहार तइठाम लोक अपनापर कते भरोस करत। कियो सुखे (सुख रोग भेने) उपास कऽ देवमंदिरमे पूजा करए जाइए तँ कियो दुखे (नै रहने) साँझक-साँझ, दिनक-दिन उपास करैत भोलाबाबाकेँ नचारी सुनबैए। खाइर छोड़ू। अपन दुख-धंधा सोचू।

राजदेव- तहूँ दुनू माए-धी जा कऽ देख अबिहह।

सुनीता- हकार अबैत तब ने जइतौं। बिनु हकारे.....। जँ पुछिदिअए जे.....?

(कृष्णानन्दक प्रवेश)

कृष्णानन्द- कक्का, नजरिउतरल (सोगाएल) बूझिपड़ैए। किछु होइए की?

राजदेव- बौआ कृष्ण, केकरा कहबै के सुनत। अपने दुनू गोटेक परिवार

अछि, सातपुस्तसँ अपेच्छा अछि। मन रखैबला एकोटा बात नै भेल। तोरा देखिकऽ खुशी होइए। मुदा.....।

कृष्णानन्द- निराश जकाँ किअए बजै छी कक्का?

राजदेव- तीर जकाँ पोतीक बात छेदने अछि। मन कलपिरहल अछिजे आब किछु करै जोकर नै रहलौं आ जखन करैबला छलौं तखन....।

कृष्णानन्द- कितखन?

राजदेव- किकहबह। एक्के बेर कहिदइ छिअ जे अपन गाछी भुताहिभऽ गेल।

कृष्णानन्द- कनी खोलिकऽ कहबै तखन ने बुझबै। चिक्कारी तँ कविकाठीक भाषा छिऐ। भलहिं उनटे किअए ने बुझिऐ।

राजदेव- भागेसर बेटाक बिआह केलक। एते दिन कनियाँ देखैक हकार आंगनमे अबैत छलनि। जाइत छलीह आ असीरवादो दैत छेलखिन। कियो तँ अपना भाग-तकदीरे जन्म लइए। तइ सूत्रे सामाजिक संबंध तँ छल। मुदा अनका-अनका हकार देलक आ......।

कृष्णानन्द- कक्का, भागेसर भैया कोनो सुखे बेटाक बिआह केलनि।

राजदेव- (धड़फड़ा कऽ) तँ......?

कृष्णान्नद- कते माससँ भौजी ओछाइन पकड़ने छथिन। भानसो-भातमे दिकते होइ छन्हि। ई तँ ओही बेचाराकेँ धन्यवाद दियनिजे भौजीकेँ जिआ कऽ रखने छथि। हमरा अहाँ घरमे होइत तँ टाँग पकड़िफेकिगंगा लाभ कऽ अबितौं।

राजदेव- जखन समाजसँ टूटिरहल छी तखन.....।

(एकाएक चुप भऽ जाइत। आँखिउठा कखनो सुनीतापर तँ कखनो कृष्णानन्दपर दैत। तहिना कृष्णानन्दो कखनो राजदेवपर तँ कखनो सुनीतापर आ कखनो मेघ दिस ऊपर देखैत तँ कखनो निच्चाँ दिस। तहिना सुनीतो।)

सुनीता- बाबा, बाबा!!

(आँखिउठा राजदेव सुनीतापर दऽ पुन: निच्चाँ धरती दिस देखए लगैत। दुनू हाथसँ आँखिपोछैत, भड़िआएल अवाजमे..)

राजदेव- बुच्ची सुनीता आ बौआ कृष्ण, दुखे किसुखे जते दिनक दाना-पानी लिखल अछिसे तँ भोगबे करब। मुदा.....।

सुनीता- मुदा की?

राजदेव- आन कियो किअए मन राखत मुदा तूँ दुनू गोरे तँ लगक भेलह। तँए किछु कहिदइ छिअह।

कृष्णानन्द- बितलेहे जिनगीक कथा ने इतिहास छी।

राजदेव- हमरा जकाँ बाबाकेँ एते अज-गज नै रहनि। मुदा समाजमे एहेन प्रतिष्ठा बनल रहनिजे जहिना कोनो पाखरिवा इनारक पानिसटल रहैए, तहिना रहनि। खेत-पथार, बाड़ी-झाड़ीसँ काज कऽ आबथिआ लोटा लेने मैदान दिस विदा होथि। जइठाम जेत्तै कियो भेट जान्हितेत्तै गामक चर्च उठा बैस जाथि। जना सौंसे गाम इस्कूले होइ।

सुनीता- की चर्च उठबथिहिन।

राजदेव- से किबुझल अछि। ताबे हमर उदैयो-प्रलय भेल रहए किनहि।

सुनीता- तखन केना बुझलिऐ।

राजदेव- साँझु पहरकेँ दादी अंगनामे बिछान बिछा दइ छेलखिन आ बाबाक खिस्सा कहै छेलखिन। एक दिन पूछिदेलियनिजे बाबी बाबासँ झगड़ो करियनि?

सुनीता- की कहलनि?

राजदेव- पहिने तँ भभा कऽ हँसली। मुदा जहिना तेल वा दूध हरा जाइ छै जेकरा आंगुर-तरहस्थीसँ हिलोरिहिलोरिबासनमे राखल जाइए। तहिना दादियो हँसीकेँ हिलोरिहिलोरिरखिबजलीह।

सुनीता- बजैकाल मन केहेन रहनि?

राजदेव- जहिना सूर्यास्तक समए सूर्जक किरिण (रश्मि) बोरिया-विस्तर समेटिसमेटिसमटाइत तहिना दादीक दुनियाँ पाछू छुटिगेलनि। बजलीह- बुढ़ामे आदतिरहनिजे साँझु पहरकेँ जे लोटा लऽ कऽ

विदा होथितँ कखन धुरिकऽ अबितथितेकर ठीक नै।

सुनीता- कतऽ चलिजाइ छेलखिन?

राजदेव- कतऽ जाइ छेलखिन से दादियोकेँ नै ने कहथिन।

सुनीता- तँए ने झगड़ा होन्हि?

कृष्णानन्द- नै, दुनू कारण भऽ सकैए।

सुनीता- कि?

कृष्णानन्द- जँ चारिघंटा बोनाएल रहलापर जते काज भेल ओते जँ परिवारोमे दोहराओल जाए तँ ओतेक समए आरो चाही। जँ ओते आरो समए लगाओल जाए तँ परिवारक काज आ व्यक्तिगत जीवन (खेनाइ-सुनताइ) प्रभावित हएत।

सुनीता- तखन तँ समाजोक (काज) बातसँ परिवारक सदस्य हटल रहत?

कृष्णानन्द- एक अर्थमे हटल रहबो नीक, आ दोसरमे नहियो। व्यक्तिआ समाजक बीच परिवारक सीमा अछि। जहिना लोकक समूह परिवार होइत तहिना परिवारक समूह समाज होइत।

सुनीता- हँ, से तँ होइत, मुदा एक दोसरमे सटल केना रहत। आकिनल-नीलक पाथर जकाँ भसिआइत रहत।

कृष्णानन्द- जँ भसिआइत रहत तँ अनेरे हवा-बिहाड़िमे एक-दोसरसँ टकरा-टकरा, फुटिफुटिपानिमे डुमैत रहत।

सुनीता- तखन, किउपाय छै?

कृष्णानन्द- यएह तँ प्रकृतक अद्भुत खेल अछि। जेतै दुखक जनम होइत अछिओतइ सुखोक होइत। सुख-दुख जौआँ सहोदर छी।

सुनीता- नीक जकाँ नै बूझिपाबिरहल छी।

कृष्णानन्द- जहिना धरती अकासकेँ शीतल-गर्म हवा जोड़िकऽ रखने अछितहिना मनुख-परिवार आ समाजक बीच अछि।

समाप्त।